अखिल भारत सर्व-सेवा-संघ का साप्ताहिक मुखपत्र

भूदान-यज्ञ

भूदानयज्ञमूलक ग्रामोद्योगप्रधान अहिंसक क्रांति का संदेशवाहक

वार्षिक मूल्य ६) ▪ सम्पादक : धीरेन्द्र मजूमदार ▪ एक प्रति २ आना

वर्ष-३, अंक-२३ ▪ राजघाट, काशी ▪ शुक्रवार, ८ मार्च, '५७

सर्वोदय का पथ

सेवा का जीवन बिताने वाले को नम्र बनना होगा। जो व्यक्ति दूसरों के लिए अपना जीवन समर्पण करता है, उसका अपना कुछ भी नहीं रह जाता है। नम्रता का अर्थ अकर्मण्यता नहीं है। सच्ची नम्रता तो मानवता की सेवा में लगातार कठिन काम करने में है।

सेवा तभी संभव है, जब कि हमारे हृदय में प्रेम या अहिंसा हो। सच्चा प्रेम तो समुद्र की तरह असीम है। अन्तःकरण में उत्पन्न होकर क्रमशः बढ़ता हुआ वह चारों ओर फैलता जाता है और सभी सीमाओं का अतिक्रम करके यह सारे संसार को समेट लेता है। फिर, यह सेवा तभी संभव है, जब मनुष्य अपनी रोटी के लिए स्वयं श्रम करे-जिसे कि गीता में 'यज्ञ' कहा है। किसी भी मनुष्य या स्त्री को जीवित रहने का अधिकार तभी होता है, जब कि वह सेवा के लिए शरीरश्रम करे। —गांधीजी

जन-जनार्दन से क्रांति-यात्रा के पथिकों की माँग !

(धीरेंद्र मजूमदार)

[श्रमभारती, खादीग्राम के वार्षिकोत्सव के अवसर पर दिया गया भाषण; बरियारपुर (मुंगेर), २४ फरवरी, १९५७-सं०]

भाई रामनारायणजी ने श्रम-भारती-परिवार को आशीर्वाद देने के लिए मुझसे कहा है। मैं आशीर्वाद क्या दूँ ? मैं तो अपने परिवार के लिए आप सब भाई-बहनों का आशीर्वाद माँगने के लिए आया हूँ ! श्रम-भारती का वार्षिकोत्सव हर साल के जैसे खादीग्राम में न करके जिले के किसी दूसरे गाँव में मनाने की बात इसलिए सोची कि अब हम जिले भर के अपने विशाल परिवार के बीच पहुँच जायँ और पूरे परिवार का आशीर्वाद लेकर सन् '५७ की क्रांति-यात्रा प्रारम्भ करें। हमारी यह यात्रा, जैसा कि मेरे साथी आचार्य राममूर्ति ने बताया, अपने परिवार के लोगों से मिलने की यात्रा है, जैसे कि आप लोग अपने फैले हुए परिवार और रिश्तेदारों से मिलने के लिए कभी-कभी घर से निकलते हैं ! लेकिन हमारा मिलना केवल मिलना ही नहीं, बल्कि अपने विचार को भी बताने का काम होगा।

आने वाले तूफ़ान के क़दम !

हम लोग खादीग्राम में जिस श्रम और साम्य की साधना में लगे हुए हैं, वह इस युग के लिए कोई खास बात नहीं है। इतना ही है कि हमने वह पहले शुरू की है। यह तो काल-पुरुष का यानी जमाने का संदेश है। काल-प्रवाह किधर जा रहा है, उसका भान संसार के साधारण लोगों को नहीं होता है। विनोबा जैसा कोई विशेष व्यक्ति ही जन-जन को चेतावनी देने के लिए ऐसा उठ खड़ा होता है। जब कभी भूकम्प शुरू होता है, तो शुरू में सबको मालूम नहीं होता है। ज़मीन शुरू में थोड़ी-थोड़ी हिलती है, तब भी लोगों को भान नहीं होता है। लेकिन जब एक आदमी समझ जाता है और चिल्लाना शुरू करके घर के बाहर निकल आता है, तो बाद में उस व्यक्ति की पुकार को सुन कर तथा भूकम्प को बढ़ते हुए देख कर दूसरे लोग भी बाहर आ जाते हैं। तो, जो व्यक्ति पहले बाहर आता है, उसे कोई त्यागी नहीं कहता है। उसी तरह आज के जमाने में वर्ग-विषमता के कारण जिस तूफान के आसार दिखायी देते हैं, उसे देख कर हम घर से पहले बाहर निकल आये हैं ! यह हमने कोई त्याग नहीं किया है। बात इतनी ही है कि हमने समझदारी की है !

विष्णु और लक्ष्मी की एकरूपता !

कोई कहता है, भूदान-आंदोलन केवल आर्थिक है, आध्यात्मिक नहीं। लोग समझते नहीं कि मंदिर में प्रसाद के तौर पर मिठाई बाँटे जाने से ही मंदिर हलवाई की दूकान नहीं बन जाता। मिठाई वहाँ धर्म का चिह्न मात्र है। उसी तरह यह जमीन बाँटना, लेना आदि कोरा बँटवारा नहीं है; यह सब प्रेम से हो रहा है। जमीन का बँटवारा तो छीन कर या कानून से भी हो सकता था। तब इसे आर्थिक आंदोलन मात्र कहा जा सकता था, लेकिन यहाँ तो सब कुछ प्रेम से ही होता है।

धर्म के साथ अर्थ का होना भी क्या कोई पाप है ? विष्णु के साथ लक्ष्मी; शिव के साथ शक्ति का होना क्या पाप है ? धर्म के साथ अर्थ आ जाने से ही वह आर्थिक मात्र नहीं हो जाता है। इस आंदोलन का स्वाद है करुणा, जो चखने में मीठा है; और रूप है अर्थशास्त्र। केवल रूप तो कोई अर्थ नहीं रखता। बगीचे के केले की मधुरता गोबर के नकली केलों में नहीं आती, यद्यपि उनका रूप केले का ही रहता है ! वैसे ही कानून से जमीन बाँटना या छीनना गोबर के केले के समान ही है। और यहाँ तो प्रेम का भी बँटवारा है !

इस आंदोलन में विष्णु और लक्ष्मी; शिव और शक्ति; मिठास और सौंदर्य साथ-साथ हैं। केवल ऊपर से नहीं, गहराई में जाकर देखना होगा।

तिरुप्पुवुड, रामनाड, १७-२-'५७ —विनोबा

हमने साल भर के लिए गाँव-गाँव और घर-घर फिरने का संकल्प आज किया है। वह केवल इस समझदारी को सर्वत्र पहुँचाने के लिए। हमारे भाई-बहन और बच्चे आपके यहाँ जायेंगे और जमाने की माँग आपके सामने रखेंगे। गांधीजी ने देश को जो मंत्र दिया है और जिस मंत्र के अनुसार आज विनोबा काम कर रहा है, वह मंत्र सामाजिक विषमता और शोषण के निराकरण का है। वह पूँजीवाद समाप्त कर श्रमवाद को प्रतिष्ठित करने का मंत्र है। समाज-जीवन को हमें पूँजी के आधार पर से हटा कर श्रम के आधार पर टिकाना है। इसलिए हमने अपने विश्वविद्यालय का नाम 'श्रम-भारती' रखा है, क्योंकि विश्वविद्यालय का आधार पूंजी नहीं है, श्रम है। आज तो केवल श्रम-भारती ही नहीं, हमारा सारा आंदोलन ही संचित निधि से मुक्त हो गया है। श्रम-भारती तो इस आंदोलन का एक छोटा-सा वाहन मात्र है। तब यह सवाल उठता है कि हम जो अपने को क्रांति का वाहन मानते हैं, उनका गुज़ारा कहाँ से हो ? सम्पत्ति से या श्रम से ? सम्पत्ति चाहे सरकार की हो, गांधी-निधि की हो, या आप सबके घर-घर की तिजोरी की या बटुए की हो, वह संचित निधि ही है; अर्थात् श्रमिक के श्रम से कमाया हुआ मुनाफा-रूपी धन ही है ! हम जो श्रम-प्रतिष्ठा की दीक्षा लेकर निकले हैं, क्या इसी संचित निधि के आश्रित होकर जीयेंगे ? अगर ऐसा किया, तो हमारी क्रांति टूटेगी ! हम सब कमजोर मनुष्य हैं, भीष्म और द्रोण जैसे शक्तिशाली और संकल्प-निष्ठ नहीं हैं। भीष्म और द्रोण को आजीवन पाण्डवों के प्रति सहानुभूति रखते हुए भी दुर्योधन के आश्रित होने के कारण कुरुक्षेत्र में कौरवों की ही ओर से लड़ना पड़ा था। तब हमारे जैसे कमजोर मनुष्य अगर पूँजी-आश्रित जीवन यापन करते रहेंगे, तो बावजूद श्रम-प्रतिष्ठा की आंकाक्षा के, श्रम और पूँजी के कुरुक्षेत्र में क्या हम श्रम के साथ रह सकेंगे ? इसलिए हमने सोचा है कि हमारा परिवार इस यात्रा में श्रम-आधारित ही रहे !

अब हम वोट माँगने आये हैं !

वैसे तो आप हमारे परिवार के लोग हैं और आपके घर टिकते समय सहज ही आपके साथ खाना खायेंगे, पर गुजारे के लिए खाना ही एकमात्र मद नहीं है। दूसरे भी मद हैं। उनके लिए हम आपसे सम्पत्तिदान नहीं माँगेंगे और न किसी संचित निधि से ही मदद माँगेंगे।

www.vinoba.in

हम आपके खेतों में मजदूरी करना चाहेंगे। सामने ही चैत का महीना आ रहा है। मजदूरों से आप अपनी रबी की फसल की कटनी कराते हैं। हमें विश्वास है कि आप हमें उस काम के लिए लगायेंगे और हमारे परिवार को मजदूरी देंगे। आपको हमसे प्रेम है, तो आपका श्रमदान भी हम ले लेंगे। अर्थात् आप भी दो-तीन दिन हमारे साथ बैठ कर कटनी में हमारी मदद कर दें। यह मदद हमारे विचार के लिए मतदान ही होगा!

हमें वोट कैसे देंगे?

अभी आप कल से राजनैतिक पक्ष के उम्मीदवारों को वोट देने निकलेंगे। हम कोई राजनैतिक पक्ष वाले नहीं हैं। हमारा लोकनैतिक पक्ष है, क्योंकि हमारा काम राज से नहीं चलने वाला है, लोगों से चलने वाला है। इसलिए हम आपसे वोट माँगने नहीं आते हैं। राजनैतिक पक्षों का चुनाव-आंदोलन आज समाप्त होता है, तो हमारा लोकनैतिक पक्ष का चुनाव-आंदोलन आज से आरम्भ होता है।

इस चुनाव में मैं निर्विरोध खड़ा हूँ। राजनैतिक चुनाव में जो निर्विरोध खड़ा होता है, उसे एक भी वोटर पूछता नहीं। यानी कोई उसके लिए वोट देने नहीं जाता है। लेकिन इस चुनाव में जो निर्विरोध खड़ा होता है, उसे हरएक वोटर वोट देने आता है। अतएव मैं आज आपसे वोट की माँग करना चाहता हूँ। साल में खरीफ या रबी के अवसर पर आप हमें तीन दिन कटनी करके श्रमदान कर दें। तीन दिन का श्रमदान हमारे लिए एक वोट होता है।

हम जब कहते हैं कि हम खादीग्राम-विश्वविद्यालय श्रमदान से चलाना चाहते हैं, तो बहुत से मित्र हमें पागल कहते हैं। वे कहते हैं कि इतना बड़ा काम आप श्रमदान से कैसे चलायेंगे? उसके लिए गांधी-निधि या सरकार से मदद लेनी चाहिए। आखिर श्रम की ताकत ही क्या है? पता नहीं, ऐसा कहने वालों की कैसी बुद्धि है!

अब हमारा चुनाव-आंदोलन प्रारंभ होने जा रहा है!

आखिर गांधी-निधि और सरकारी कोष क्या चीज है? श्रमिकों के श्रम में से कुछ मुनाफा आप लोगों की पेटी में पहुँचता है और उसमें से कुछ टुकड़े बटोर कर गांधी-निधि या सरकारी कोष बनता है। इस टुकड़खोर सम्पत्ति में शक्ति है और सम्पत्ति के मूल स्रोत श्रम में शक्ति नहीं है, ऐसा कहने वाला पागल है या मैं पागल हूँ?

यह तो ऐसी ही बात हुई कि कोई व्यक्ति गमछा और कपड़ा लेकर नदी में स्नान करने के लिए जाता हो और दूसरा व्यक्ति उससे यह कहता हो कि नदी में स्नान करने के लिए काफी पानी नहीं है, आप चलिये मेरे गुसलखाने में। वहाँ चौहबच्चा भरा हुआ है!

तो, मैं इस जिले के हर एक वोटर से अपना वोट माँगता हूँ। वे सब साल में तीन दिन कटनी करके हमें श्रमदान करें। राजनीति के वोटरों से हमारे वोटरों की संख्या अधिक है। २१ साल की उम्र से पहले उनके वोटर नहीं बन सकते हैं। पर जब से हँसिया पकड़ना सीखते हैं, तब से लोग हमारे वोटर होते हैं। अर्थात् सात साल से साठ साल की उम्र तक के सभी लोग हमारे वोटर हैं। इस जिले की २८ लाख लोक-संख्या है। उसमें से २० लाख हमारे वोटर हैं। ये २० लाख वोटर जब हमें साल में तीन दिन का समय देंगे, तो खादीग्राम ही क्यों, मैं आपके जिले के २७ थानों में २७ श्रमभारती-केंद्र बना कर चला दूँगा!

हमारे पोलिंग-एजेंट!

श्रम-भारती-परिवार के भाई-बहन इस जिले के गाँव-गाँव और घर-घर वोट माँगेंगे। जिले के तीन हजार गाँवों में हमारा बक्सा रहेगा! अब हर गाँव में हमारे लिए एक-एक पोलिंग एजेंट चाहिए, जो गाँव भर के मत संग्रह करके उस पेटी में डालेंगे। हर गाँव में हमारे जो प्रेमी भाई-बहन हैं, वे अपना नाम पोलिंग-एजेन्सी में लिखाने की कृपा करेंगे।

इसका मतलब यह नहीं है कि हम आपसे सम्पत्तिदान नहीं माँगेंगे! माँगेंगे जरूर, लेकिन अपने लिए नहीं, बल्कि उन साधन-हीन श्रमिकों के लिए; जिन्हें आप जमीन दे रहे हैं। सदियों से हम लोग उनके श्रम से गुजारा करते हैं। उनकी अरबों-खरबों की सम्पत्ति हमने अलग-अलग रूप से लेकर भोग ली है, भोग रहे हैं। सम्पत्तिदान-यज्ञ उन्हींके धन का थोड़ा हिस्सा उन्हें ही वापस देने की कोशिश मात्र है। अतः सम्पत्तिदान से साधनहीनों को सामान देने का कार्यक्रम चलेगा। मुझे विश्वास है, इस जिले के भाई-बहन इस यज्ञ में उत्साहपूर्वक आहुति देंगे।

इतना कह कर फिर से एक बार अपने परिवार की इस क्रांति-यात्रा के लिए आप सबका आशीर्वाद चाहता हूँ।

—

पूर्णियाँ-जिला-निवासियों से निवेदन

(वद्यनाथ प्रसाद चौधरी)

पूज्य विनोबाजी ने बार-बार अपनी आशा व्यक्त की है कि पूर्णियाँ जिले में भूक्रांति पूर्ण होकर रहेगी। पूर्णियाँ में कार्य पूर्ण नहीं हुआ, तो उसका नाम ही बदनाम हो जायगा। यह खुशी की बात है कि भूदान-आन्दोलन में अब तक उसका गौरवपूर्ण स्थान रहा है। आशा है, १९५७ की क्रांति में भी पूर्णियाँ अपनी प्रतिष्ठा की रक्षा करने में पीछे नहीं रहेगा। विनोबाजी की बिहार-यात्रा के समय इस जिले ने कुल ९५ हजार एकड़ भूमि दान में दी, जिसमें से २१ हजार एकड़ बँट भी चुकी है।

पलनी के तंत्र-मुक्ति और निधि-मुक्ति के निर्णय के बाद जिले में और भी उत्साह बढ़ा है और सन् '५७ की क्रांति सफल बनाने के लिए लोग जुट गये हैं। निधिमुक्ति के बाद आवश्यक हो जाता है कि विनोबाजी की माँग के अनुसार प्रत्येक परिवार से एक मनुष्य का दान भूक्रांति के लिए मिले और सभी रचनात्मक संस्थाएँ, ग्रामपंचायतें, राजनीतिक पक्ष, छात्र-शिक्षक, दाता-आदाता सहयोग दें।

१९५७ की क्रांति को सफल करने के लिए हम क्या करें?

(१) ग्रामदान तथा ग्राम-संकल्प के विचार-प्रचार द्वारा ग्रामराज्य-स्थापना की चेष्टा करें।

(२) १८ अप्रैल को गाँव-गाँव में सभा कर उस गाँव में भूदान में मिली भूमि का वितरण का कार्य सम्पन्न करें। गाँव की भूमिहीनता मिटाने का प्रयत्न करें। उसी दिन भूमिहीनता नहीं मिटायी जा सके, तो १९५७ के अन्त तक गाँव की भूमिहीनता मिटाने का संकल्प कर, उसकी सफलता के लिए कार्य में जुट जायँ।

(३) २० मार्च '५७ से ५ अप्रैल '५७ के बीच बिहार प्रान्त के सभी सबडिविजनों में तीन-तीन दिन का शिविर करने का निश्चय किया गया है। पूर्णियाँ जिले के भी फॉरबिसगंज, पूर्णियाँ, कटिहार तथा किसनगंज में भी इस अवधि के भीतर तीन-तीन दिन के शिविर होंगे। प्रत्येक शिविर में प्रथम दिन श्री दादा धर्माधिकारी एवं अन्य दिनों में अन्य प्रमुख नेताओं के प्रवचन एवं सभा में भाषण होंगे। इन शिविरों में १८ अप्रैल के कार्यक्रम को सफल करने की योजना की जायगी। अपने सबडिविजन के शिविर में शामिल होकर किसी एक गाँव में १८ अप्रैल का कार्यक्रम सम्पन्न करने का उत्तरदायित्व अपने ऊपर लें।

(४) आपने भूदान दिया हो और उस भूमि का वितरण किसी कारण से अब तक नहीं हुआ हो, तो १८ अप्रैल के पूर्व उसका वितरण जरूर करा दें। अब तक किसीने भूदान न दिया हो, तो अपनी भूमि का छठा हिस्सा देकर १९५७ में देश की भूमि हीनता मिटाने के संकल्प की पूर्ति में सहायक बनें।

(५) सर्वोदय-साहित्य के प्रचार में शक्ति लगायें। आपके गाँव में "भूदान-यज्ञ" पत्रिका न आती हो, तो तुरंत वार्षिक मूल्य भेज कर उसे मँगाने और उसके सामूहिक वाचन की व्यवस्था की जाय।

(६) भू-क्रांति को सफल बनाने के लिए अपना १९५७ का पूरा समय इस कार्य में लगाने का संकल्प करें।

(७) भू-क्रान्ति को सफल बनाने के कार्य में लगे तंत्र एवं निधि-मुक्त कार्यकर्ताओं के निर्वाह-खर्च एवं आन्दोलन-संचालन के लिए सम्पत्तिदान, अन्नदान एवं सूत्र-दान दें। इसके अलावा बुद्धिदान, श्रमदान, समयदान; जो जिससे हो सके, दें।

कार्य की सहूलियत की दृष्टि से चारों सबडिविजनों में सबडिविजनल सर्वोदय-कार्यालय चालू किये गये है। एक-एक सेवक ने वहाँ के कार्य में योग देने का जिम्मा लिया है। निवेदन है कि अपने सबडिविजन के सेवक से नीचे लिखे पते से सम्पर्क स्थापित कर इस क्रान्ति में अपनी सहायता प्रदान करें।

(१) सदर—श्री विंध्येश्वरीप्रसादसिंह, सर्वोदय-आश्रम, पो० रानीपतरा, पूर्णियाँ

(२) अररिया—श्री अनिरुद्धप्रसादसिंह, सर्वोदय-आश्रम, वैद्यनाथपुर, पो०अररिया आर० एस०, पूर्णियाँ

(३) कटिहार-श्री महावीर झूरा, बिहार खादी-ग्रामोद्योग-संघ (खादीभंडार) कटिहार, पूर्णियाँ

(४) किसनगंज-श्री सत्येन्द्र नारायण सिंह, बिहार खादी-ग्रामोद्योग-संघ (खादी-भंडार) किशनगंज, पूर्णियाँ

—

www.vinoba.in

सर्वोदय की चतुर्विध निष्ठा

(सिद्धराज ढड्ढा)

हम अक्सर कहते हैं कि हमारा लक्ष्य मौजूदा समाज-रचना को बदलने का है। प्रचलित केन्द्रित शासन-पद्धति और उत्पादन-पद्धति की जगह ग्रामराज और ग्रामोद्योग की हमें स्थापना करनी है। इसमें शक नहीं कि अहिंसक याने शोषण-रहित समाज की और शान्ति की स्थापना के लिए इस तरह की समाज-रचना आवश्यक है। पर इस विचार में जो अधूरापन है, उसे समझ लेना चाहिए। सिर्फ समाज-रचना बदलने से याने मनुष्य के आस-पास की परिस्थिति बदल देने से क्रांति नहीं होती! क्रांति तो मूल्यों के बदलने से, अर्थात् लोगों के विचार और वानस बदलने से ही हो सकती है। इसलिए चरखा कातना, खादी पहनना, ग्रामोद्योगी चीजें इस्तेमाल करना, गाँव की व्यवस्था गाँव में कर लेना आदि तो सर्वोदय के बाहरी लक्षण हैं; असली और बुनियादी बात है—आज जो गलत मान्यताएँ लोगों ने अपना रखी हैं, जिनके कारण विषमता और शोषण आदि पैदा होते हैं, उन्हें ही बदलना। दूसरे शब्दों में, मनुष्य जब तक अपने को नहीं बदलेगा, तब तक सिर्फ बाहरी व्यवस्था, समाज-रचना आदि बदलने से सर्वोदय नहीं होगा। तो फिर, वे बुनियादी तत्त्व या मूल्य क्या हैं, जिन्हें हमें सर्वोदय की सिद्धि के लिए जीवन में स्थान देना है?

सर्वोदय शब्द बहुत आसान है। उसके शब्दार्थ से ही बुनियादी बात हमारी समझ में आ जाती है। 'सबका विकास, सबका उदय हो', यह इस शब्द का अर्थ है। बहुत सीधी बात है कि सबका विकास हो, सबका उदय हो। शायद ही कोई इससे इन्कार करे? पर सबके उदय में, सबके विकास में आज क्या रुकावट है, उस पर हमको ध्यान देना होगा। सबसे बड़ी रुकावट यह है कि आज एक व्यक्ति दूसरे के शोषण पर अपना जीवन चलाता है। एक श्रम करता है, दूसरा उसके श्रम के फल से अपनी जीविका बसर करता है। शोषण का यह तरीका प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से समाज में आज व्याप्त है। हम मध्यम-वर्ग वाले खास तौर से इस शोषण के लिए जिम्मेदार हैं। अतः अगर सर्वोदय करना है, तो सबसे पहले जो चीज हमारी जिंदगी में उतारनी है, वह शरीर-परिश्रम की निष्ठा है, जिसकी तरफ गांधीजी ने चरखे के द्वारा हमारा ध्यान खींचना चाहा था। शरीर-परिश्रम का हम इतना ही मतलब न समझें कि थोड़ा चरखा कात लिया या सफाई का कुछ काम कर लिया। इतने भर से काम नहीं चलेगा। असल में होना यह चाहिए कि श्रम हमारी आजीविका का साधन बने। यह शरीर-परिश्रम-निष्ठा है। इस तरह की श्रम-निष्ठा जब तक लोगों में नहीं होगी, तब तक दुनिया में शोषण कायम रहेगा। शरीर-परिश्रम से हटने की वृत्ति शोषण का बड़ा कारण है। अगर शोषण खतम करना है, तो हर एक व्यक्ति को श्रम से आजीविका चलाने की कोशिश करनी चाहिए। आज हम बहुत से लोग चाहते हुए भी वैसा नहीं कर पाते हैं, यह अलग बात है। लेकिन अगर ईमानदारी से उस ओर बढ़ते चले जायँ, तो भी काफी है।

संघर्ष जीने के लिए नहीं, प्रभुत्व के लिए!

पश्चिम से जो दर्शनशास्त्र और अर्थशास्त्र आया, उसके आधार पर आजकल अक्सर यह कहा जाता है कि 'स्ट्रगल फार एग्ज़िस्टन्स' याने जीवन के लिए संघर्ष करना पड़ता है। यह विचार गलत है और मानव-मानव के बीच भेदभाव और द्वेष को बढ़ाने वाला है। जीवन के लिए संघर्ष हो, यह जरूरी नहीं है। प्रकृति का भंडार इतना प्रचुर है कि जीवन के लिए संघर्ष की आवश्यकता भी नहीं है। बिना संघर्ष के जीवन जिया जा सकता है। लेकिन असल में संघर्ष जीवन के लिए नहीं है, संघर्ष एक-दूसरे पर प्रभुत्व जमाने के लिए, बिना श्रम किये कैसे खायँ, इसलिए है। मनुष्य प्रकृति द्वारा दिया हुआ अपना कर्तव्य-पालन करके जीवन-यापन करे, तो जीवन के लिए संघर्ष करने की जरूरत ही नहीं है। लेकिन आज हम लोगों ने जीवन को जो संघर्ष मान लिया है, वह इसीलिए कि आज हम दूसरे के श्रम पर जीना चाहते हैं! तो, सर्वोदय की पहली निष्ठा शरीर-परिश्रम से आजीविका प्राप्त करने की याने उत्पादक श्रम की है।

कुछ गलत नारे!

दूसरी बात समर्पण-बुद्धि की है। श्रम हम करते हैं, इसलिए उसके फल पर हमारा अधिकार है, यह नहीं मानना चाहिए। अक्सर लोग नारा लगाते हैं कि 'जमीन किसकी? जोते जिसकी; सम्पत्ति किसकी? मेहनत जिसकी।' यह नारा गलत है। श्रमिकों को संगठित करने में इस नारे का उपयोग हुआ है, लेकिन अगर श्रमिक यह समझें कि श्रम के फल पर उनकी मालकियत है, तो दुनिया से मालकियत खतम नहीं होगी और न अमन-चैन होगा। आज चंद लोगों की मालकियत है। उसे मिटा कर बहुत से लोगों की मालकियत बना देना क्रांति नहीं है। बुराई का गुणाकार कर देने से बुराई मिटती नहीं, बढ़ती है। अगर मालकियत बुरी है, तो उसका केवल गुणाकार करने से क्या होगा? स्वार्थ-वृत्ति, यानी मालकियत और संग्रह की भावना जब तक हर एक के दिल से नहीं निकलेगी, चाहे वह सेठ हो, श्रीमान् हो या गरीब हो, तब तक दुनिया से शोषण मिट नहीं सकेगा। इसलिए शरीर-परिश्रम-निष्ठा के साथ-साथ समर्पण-बुद्धि भी, याने जो कुछ है, सबका है, उस पर हमारे अकेले का अधिकार नहीं है, यह भावना होनी चाहिए। यह दूसरी बात है, जो हमें समझ लेनी चाहिए।

दया बनाम समवेदना

तीसरी बात, जो हमें ध्यान में रखनी है, वह है—समवेदना। आस-पास में जो दुखी हैं, जो हमसे नीचे की ओर हैं, शरीर में, धन में या बुद्धि में, उनके प्रति करुणा की भावना जब तक हृदय में नहीं होगी, तब तक हम सर्वोदय के आदर्श तक नहीं पहुँच सकते। इसलिए हृदय में समवेदना जगाना सर्वोदय के लिए अत्यन्त जरूरी है। लेकिन समवेदना जागृत हो, यह भी काफी नहीं है। समवेदना केवल दया का रूप भी धारण कर लेती है। गरीब या भिखमंगों पर दया करना सच्ची समवेदना नहीं है। होना यह चाहिए कि मानव-मात्र एक भूमिका पर हैं, सब समान हैं और आदर के पात्र हैं, इसलिए दूसरों का दुःख हमारा दुःख है और उसे सिर्फ राहत नहीं पहुँचाना है, बल्कि दुःख मिटाना है—यह बात जब तक नहीं होगी, तब तक समवेदना दया में परिणत हो जायेगी। इसलिए समवेदना के साथ-साथ मानव-समानता की बात आनी चाहिए।

इस प्रकार सर्वोदय की सिद्धि के लिए चार बातें आवश्यक हैं, जो हर एक मनुष्य के जीवन में उतरनी चाहिए: (१) श्रमनिष्ठा, (२) समर्पण-बुद्धि, (३) समवेदना और (४) मानव-मात्र की समानता की अनुभूति। इन चार बातों का, मूल्यों का, अगर जीवन में समावेश होगा, तो सर्वोदय की ओर हमारा कदम बढ़ेगा। जब तक इन चारों बातों का हमारे जीवन में प्रवेश नहीं होगा, तब तक सर्वोदय से हम दूर ही रहेंगे।

नौ वर्ष हो गये, गांधीजी गये। साल में दो-एक बार गांधीजी को याद करने या ३० जनवरी से १२ फरवरी तक का पखवारा मनाने का अर्थ यदि इतना ही हो कि घंटे-आध-घंटे बैठ गये और सूत कात लिया, तो मुझे डर है कि यह स्थूल पूजा दूसरे देवों की उपासना की तरह हो जायगी। उसमें यह खतरा है, इसलिए गांधीजी को दी जाने वाली श्रद्धांजलि के पीछे जो भावना या संदेश है, उसकी याद ताजी रहे और समाज में परिवर्तन लाने का वह अस्त्र बने, यह हमें ध्यान में रखना है। गांधीजी जिन मूल्यों के लिए जिये और मरे, अगर उन मूल्यों को हम अपने जीवन में नहीं उतारते हैं, तो यह उपासना केवल शव-पूजा मात्र रह जायेगी! हमारे देश में बहुत देवों की पूजा होती ही है! उसमें एक और वृद्धि हो जायगी। इसलिए हमें सावधान रहना है। आज देश में भूदान-यज्ञ का एक बड़ा कार्यक्रम चला है। गांधीजी गये, परन्तु उनका विचार इस यज्ञ के जरिये सारी दुनिया में फैल रहा है। इस कार्यक्रम ने यह सिद्ध किया है कि अहिंसक प्रक्रिया के जरिये समाज में परिवर्तन हो सकता है। लाखों एकड़ जमीन मिली, ग्रामदान हुआ, ग्रामीकरण का विचार फैला, जमीन पर से मालकियत हटी, यह समवेदना और समर्पण बुद्धि का एक ज्वलन्त करिश्मा है। इसलिए आज गांधीजी के श्राद्ध-दिवस के अवसर पर हम सब संकल्प करें कि संसार से अशांति मिटाने के लिए हम सब सर्वोदय की सिद्धि के इस कार्यक्रम में जुट जायेंगे और ऊपर बतायी हुई चतुर्विध-निष्ठा को जीवन में उतारेंगे।*

---

* गांधीजी के श्राद्ध-दिवस, १२ फरवरी '५७ को श्रमभारती, खादीग्राम में दिया हुआ भाषण। —सं०

...जो सच्ची स्वतंत्रता है, जो कि पाने योग्य है, वह आत्म-समर्पण से ही मिल सकती है। इस प्रकार मनुष्य जब अपने-आपको खो देता है, तभी वह सर्वजन की सेवा में अपने-आपको पा लेता है। तब वह एक नया मनुष्य बन जाता है, जो कि ईश्वर की सृष्टि की सेवा में अपने-आपको गँवाते हुए कभी भी नहीं थकता है।

—गांधीजी

---

www.vinoba.in

विनोबा-प्रवचन-सार

आज राजनीतिक क्षेत्र में काम करने का अर्थ इतना ही हो गया है कि सार्वजनिक सेवा-कार्य में ध्यान न देना ! राजनीति में पड़े याने मत्सर में पड़े हैं; द्वेष-झगड़े में फँसे हैं, स्वार्थ साधने की कोशिश कर रहे हैं, अपनी सत्ता जमाने का प्रयत्न कर रहे हैं। स्वार्थ के सिवा और कोई परमार्थ का कार्य वहाँ नहीं हो रहा है। ऐसे थोड़े-से लोग वहाँ हैं, जिनको सचमुच काम है। बाकी किसी को वहाँ काम नहीं है। असेम्बली में जाते हैं, तो वहाँ उनसे कहा जाता है कि महीने में सिर्फ दो-तीन दिन हाजिर रहो। फिर पूरे महीना गैरहाजिर रहो, तो भी चलेगा ! जब कोई महत्व का काम, खतरा आयेगा, उस वक्त हाथ ऊपर करने के लिए मनुष्य कम नहीं पड़ने चाहिये ! वहाँ हाथों की जरूरत है, दिमाग की नहीं। चंद लोग दिमाग ही चलाते हैं। जिन लोगों को आलोचना करनी है, वे बुद्धि चलाते हैं। बाकी हाथ ऊपर करने वाले लोग होते हैं, जिन्हें इधर-उधर जाने के लिए रेलवे के मुफ्त पास मिलते हैं, इसलिए कि वे लोगों की सेवा करें ! उन्हें साल भर तनख्वाह भी मिलती है, जब कि वे वह काम सिर्फ चार-पाँच महीने ही करते हैं। हाजिर तो बहुत ही कम रहते हैं। वे सेवा नहीं करते हैं, तो कम-से-कम नाहक खर्च भी हम उन पर क्यों करें, यह हमें सोचना चाहिये। (इडीया पट्टी, त्रिची, ११-१)

स्वर्ग में मेवा, पर आज फ़ाक़ा !

आज कम्युनिस्ट कहते हैं कि आखिर में राज्य क्षीण हो जायेगा। बहुत बड़ा आशीर्वाद दे दिया ! लेकिन यह फलेगा कब ? आज से ही सत्ता क्षीण होने लगेगी, तब ही तो ! लेकिन आज तो केंद्रीय सरकार के पास ज्यादा-से-ज्यादा सत्ता चाहिये। इधर सत्ता क्षीण होने की बात है और उधर केंद्र के हाथ में ज्यादा-से-ज्यादा सत्ता है। पुराणों में अभिवचन दिया है कि मरने के बाद स्वर्ग में मेवा खाने को मिलेगा, लेकिन अभी तो फ़ाक़ा करो। आज फ़ाक़ा, परंतु मरने के बाद मेवा ! इस तरह आज ज्यादा-से-ज्यादा सत्ता और आखिर में सत्ता क्षीण होगी ! कम्युनिस्ट तो खैर, मानते भी हैं कि आखिर में सत्ता क्षीण होगी, सिर्फ आज मजबूत राज-सत्ता चाहिये। परंतु दूसरे लोग तो सदा राज-सत्ता ही चाहते हैं और जो राजसत्ता के दुश्मन हैं, वे भी आज राजसत्ता चाहते हैं !

इन राजनैतिक पक्षों में हम कोई सार की चीज नहीं देखते हैं। उनमें दुनिया को बचाने की ताकत नहीं है। यह ठीक है कि आज का कारोबार किस तरह से चले, यह वे देख लेते हैं। जैसे पास में जो पैसा है, उसका इस्तेमाल कैसे करना है, यह वे देखते हैं। लेकिन पैसा खत्म होने पर क्या करना है, यह नहीं देखते हैं। उनकी शक्ति उतनी ही है।
(कारैक्कुडी, रामनाड़, १५–२)

सरकार हमें कैसे हाथ में लेनी है ?

आजकल सब लोग शांति चाहते हैं। जैसे पुराने ब्राह्मण 'शांति, शांति, शांति,' मंत्र जपते थे, वैसे आज सब जपते हैं। परंतु केवल जप से काम नहीं होगा। उसके साथ तप चाहिये। तप यह है कि कोई चीज अपनी नहीं, सबकी समझनी चाहिये। ग्रामदान वाले गाँव में यही हो रहा है। वे कोई यक्ष-किन्नर या गंधर्व नहीं हैं। वे भी आप जैसे मामूली लोग हैं। परंतु उन्हें विचार समझाया गया, वे समझ गये और उन्होंने उस पर अमल करना शुरू किया। हमने इस काम के लिए सरकार से पूछा भी नहीं था, क्योंकि यह कार्य जन-शक्ति का था। जब सरकार ने देखा कि इतना बड़ा कार्य हो रहा है, तो उन गाँवों के लिए एक सरकारी ऑफिसर नियुक्त कर दिया। जब सभी गाँव ग्रामदान हो जायँगे, तब सरकार ही बदल जायेगी। सबके सब नौकर आपके नौकर बन जायँगे, फिर ग्रामदान के गाँवों के लिए मदद देना ही सरकार का काम रहेगा। सरकार आज कानून और शांति के लिए जो खर्च कर रही है, उसकी जरूरत ही नहीं रहेगी। वह सब खर्च हम ग्रामदान के गाँव के लिए माँग लेंगे। इसी तरह विकास के लिए, तालीम के लिए जो खर्चा हो रहा है, वह भी हम माँग लेंगे। इस तरह सरकार का एक-एक हिस्सा अपने हाथ में लेंगे।
(कल्लनै, त्रिची, २०-१)

श्रद्धापूर्वक हिम्मत से काम करें

ऊपर-ऊपर से ऐसा दिखायी देता है कि शैतान की ताकत बढ़ रही है ! परंतु जब शैतान का बल बढ़ता है, तब भगवान् का उदय होता है। घनघोर रात्रि हो गयी, तो समझना चाहिये कि अब सूर्य उगेगा। मध्य-रात्रि के बाद धीरे-धीरे अंधकार खत्म होता चला जायेगा और निश्चित तौर पर सूर्य का उदय हो जाने वाला है। आज अंधकार में सारी ताकतें खूब उभर आयी हैं। अतः इस समय हम सबको जाग जाना चाहिये और अपने-अपने दीपक जला लेने चाहिये। ऐसा करेंगे, तो हमारे इर्दगिर्द अंधकार नहीं रहेगा। अंधकार के बाद सूर्योदय हो जायेगा, तो अंधकार खत्म ही हो जायेगा, परंतु हमको तो अभी से जाग जाना चाहिये और उत्साह से सूर्योदय के पहले हमारा काम शुरू कर देना चाहिये, याने दीपक जला देना चाहिये; क्योंकि हमको विश्वास है कि सूर्योदय हो रहा है। सूर्योदय होगा और काम हो जायगा, ऐसी ही आज दुनिया की हालत है। हमको तो आज निराशा का कोई कारण नहीं दीख रहा है, बल्कि बहुत ही उत्साह का कारण दिखायी देता है। इसलिए हम चाहते हैं कि सब लोग, "प्रभु की कृपा हो रही है, प्रभु आ रहे हैं, प्रभु का अवतार हो रहा है," ऐसी श्रद्धा रख कर ही हिम्मत से काम करें।

जैसे उन्होंने शस्त्रास्त्र मजबूत बनाये हैं, वैसे हमको भी अपने शस्त्रास्त्र मजबूत बनाने होंगे। उनके औजार हैं–स्पर्धा, हिंसा, भय, शस्त्रास्त्र। हमारे औजार हैं–प्रेम, दया, करुणा, दान, त्याग, निर्भयता आदि। हमको ऐसी मजबूत मंडली, सेना, औजार बनाना चाहिये कि उनसे हम मुकाबला कर सकें। यह सब धर्म वालों को करना चाहिए, नहीं तो ये सभी धर्म वाले फीके पड़ जायेंगे। उनके लिए फिर कुछ काम ही नहीं बचेगा !
(अरमूतंगी, तंजाऊर, ११-२)

विज्ञान का तक़ाज़ा

...पहले अपने जीवन से निजी मालकियत छोड़ने का काम माणिक्यवाचकर, नम्मलवार जैसे संत करते थे, तो लोग उनको ऊँचा बिठा देते थे और कहते थे कि 'आप महापुरुष हैं, आपको हमारा नमस्कार ! पर आपका अनुकरण हम नहीं कर सकते, हाँ आपका नाम जरूर लेंगे !' पर आज, जहाँ ग्रामदान हो रहे हैं, ग्राम के सीधे-सादे लोग भी अपनी मालकियत छोड़ रहे हैं। इसका मतलब है कि मनुष्य का हृदय अब विशाल हो रहा है, छोटे-छोटे बच्चे भी सारी दुनिया की बात सोचते हैं।

जहाँ सारी दुनिया का विचार होता है, वहाँ प्रेम और अहिंसा की आवश्यकता मालूम होती है। अभी मिस्र पर इंगलैंड का आक्रमण हुआ था। अगर दो सौ साल पहले यह आक्रमण हुआ होता, तो मिस्र बिलकुल खत्म हो जाता और इंग्लैंड के अधिकार में आ भी जाता और दूसरे देशों को उसका पता तक नहीं चलता ! परंतु आज हालत यह है कि उस आक्रमण से सारी दुनिया का पुण्य-प्रकोप जागृत हो गया। इस तरह आज दुनिया के किसी एक कोने में अन्याय की घटना हुई, तो सारी दुनिया में उसकी खबर पहुँच जाती है और लोगों में क्षोभ शुरू हो जाता है, क्योंकि आज सारी दुनिया की विवेक-बुद्धि बढ़ रही है। ऐसी विवेक-बुद्धि पहले नहीं थी, इसलिए आज मनुष्य के सामने ऊंचा मानव-ध्येय आता है, तो वह मनुष्य को बड़ा आकर्षक भी मालूम होता है। पहले भी उसका आकर्षण होता था। संत पुरुष मानवता का ध्येय लोगों के सामने रखते भी थे। लेकिन वह ध्येय लोगों के अमल में नहीं आ सकता था। परंतु आज ऐसा समय आया है कि अगर उस मानवता पर अमल नहीं करेंगे, तो हम जीवित ही नहीं रह सकेंगे ! हिंसा से आज हम बच नहीं सकते, संकुचित बुद्धि से भी आज हमारा बचाव नहीं हो सकेगा। एक घर को आग लगी, तो वह दूसरे पड़ोस के घर को छूएगी और सारा गाँव जल कर भस्म होगा। इसलिए विज्ञान के जमाने में व्यक्ति अपना अलग-अलग सोचेगा, तो टिक नहीं सकेगा, अतः उसको अपना परिवार बढ़ाना ही होगा।

समाज जब अवनत दशा में होता है, तब उसके सामने कोई उच्च आकांक्षा, उच्च लक्ष्य नहीं रहता है। फिर तो मानव का जीवन साधारण प्राणियों के जीवन जैसा ही बन जाता है। समाज अपने सामने केवल उत्पादन बढ़ाने का काम रखेगा, तो वह कोई ऊँचा जीवन होगा, ऐसा नहीं कहा जा सकता। बहुतों को लगता है कि "हिंदुस्तान के सामने संपत्ति बढ़ाने का बड़ा भारी लक्ष्य आ गया है।" पर पशुओं के जीवन में भी यह विचार होता है। कई छोटे-छोटे जीव-जंतु और चींटियाँ संग्रह करके रखती हैं ! यह सब अमेरिका में हो भी चुका है। फिर भी वहाँ शांति नहीं है। वहाँ का समाज भयभीत है। यह ठीक है कि हिंदुस्तान में पैदावार बहुत कम होती है, इसलिए उसे बढ़ाने की जरूरत है, परंतु जीवन तो तब उन्नत होगा, जब ऊँचा लक्ष्य सामने रहेगा।
(तंबीकोटै, तंजाऊर '६-२)

---

www.vinoba.in

'मालिक सीताराम, छोट्-मन काहे कियो !'

(सिद्धराज ढड्ढा)

ता० १६ फरवरी का प्रभात था।

अभी सूरज नहीं उगा था, पर पूरब की तरफ आकाश में उषा की लाली प्रगट हो रही थी। इतने में दूर से सामूहिक धुन तथा नारों की एक अस्पष्ट-सी ध्वनि कानों में पड़ी। सवेरे के सुन्दर, शान्त वातावरण को चीरती हुई वह आवाज धीरे-धीरे साफ होती गयी :

"सीता-सीताराम बोलो, सब कोई भूमिदान दे दो।
राधे-राधेश्याम बोलो, सब कोई संपत्तिदान दे दो ॥"

और बीच-बीच में नारा लग रहा था :

"ललमटिया का ग्रामदान–सफल करेंगे, सफल करेंगे।
ललमटिया में ग्रामराज–कायम करेंगे, कायम करेंगे।"

* * *

बिहार के मुंगेर जिले में श्रम-भारती (खादीग्राम) के बिलकुल बगल में दो फर्लांग से भी कम दूर ललमटिया गाँव है। गाँव में ३७ परिवार हैं। कुल आबादी १७५ और जमीन करीब १५० एकड़। ललमटिया के कुछ लोग, खासकर नौजवान और बालक, श्रम-भारती के कामों में और श्रमशाला में आते हैं। ग्रामराज की बात वे अक्सर श्रम-भारती की चर्चाओं में सुनते थे। श्रम-भारती में चलने वाली श्रम-साधना और ग्रामोद्योगों आदि का प्रत्यक्ष दर्शन भी उन्हें होता था। धीरे-धीरे उनका कुतूहल जागृत हुआ। चार दिन पहले उनमें से कुछ लोग आये और श्रम-भारती के कार्यकर्ताओं से पूछने लगे कि "ग्राम-राज कैसे कायम किया जाता है, ग्रामराज में क्या-क्या करना होता है, क्या हम लोग भी हमारे गाँव में ग्रामराज चला सकते हैं, आदि !" श्रम-भारती के श्री रवीन्द्र भाई तथा आचार्य श्री राममूर्तिजी वगैरा ने उन्हें ग्रामराज की बातें समझायीं और पहले कदम के तौर पर सारी जमीन एक करके आपस में बराबर बँटवारा कर लेने की बात कही।

चार दिन तक गाँव के लोग आपस में चर्चा करते रहे, समझते-समझाते रहे और बीच-बीच में अपनी शंकाओं तथा कठिनाइयों का समाधान कार्यकर्ताओं से पूछते रहे। श्रम-भारती में भी हम लोगों में उत्सुकता का वातावरण फैल गया। ज्यों-ज्यों ग्रामदान की भावना बढ़ती गयी, त्यों-त्यों कार्यकर्ताओं के मनों में और आपस की बातचीत में आनन्द की एक अव्यक्त लहर उठने लगी। पर गाँववाले खूब अच्छी तरह सब बात समझ लें और निश्चय करें तथा पक्का करें, इस दृष्टि से उनके एक-दो बार कहने पर भी कि वे ग्रामदान के लिए तैयार हैं, उन्हें पुनः पुनः सोचने के लिए कहा गया।

ता० १५ फरवरी की रात को श्री रवीन्द्र भाई फिर गाँववालों की बुलाहट पर ललमटिया गये थे। इसलिए ता० १६ फरवरी को सवेरे ललमटिया की ओर से नारों और गानों की आती हुई आवाज कानों में पड़ते ही 'ललमटिया का ग्रामदान हो गया !'—यह बात एक मुँह से दूसरे मुँह तुरन्त श्रम-भारती में फैल गयी। जैसे किसी परिवार में नये बालक के जन्म पर सबके मनों में आनन्द छा जाता है, ठीक वैसा ही महसूस हो रहा था। हृदय में बिजली-सी दौड़ गयी। अहिंसक क्रांति के सूरज को उगते हुए सचमुच हम अपनी आँखों से देख रहे थे ! गाँववालों का एक दल चला आ रहा था। बीच-बीच में श्रम-भारती की 'उत्तर बुनियादी' कक्षा के छात्र और रवीन्द्र भाई आदि कुछ कार्यकर्ता दूध में दही के जामन की तरह बिखरे हुए थे और नारा बुलन्द हो रहा था—

"ललमटिया का ग्रामदान–सफल करेंगे, सफल करेंगे !
ललमटिया में ग्रामराज–कायम करेंगे, कायम करेंगे !"

दिन को करीब ४ बजे ललमटिया के बाहर एक महुए के नीचे गाँव के करीब-करीब सब स्त्री-पुरुष, बाल-बच्चे इकट्ठे हुए। हालाँकि ग्रामदान का निर्णय गाँववालों ने पिछली रात को ही कर लिया था, पर रवीन्द्र भाई का कहना था कि उस समय स्त्रियाँ मौजूद नहीं थीं, इसलिए दिन में फिर सभा करके ग्रामदान का और ग्रामराज की स्थापना का संकल्प गाँव के सब स्त्री-पुरुष मिल कर करें। श्रम-भारती के हमारे मुखिया श्री धीरेन्द्र भाई तथा श्रम-भारती का सारा परिवार भी सभा में मौजूद था। चारों ओर हरी-भरी ऊँची-नीची पहाड़ियों के बीच प्रकृति की गोद में यह छोटा-सा जन-समूह एकत्र था। ढोलक और मंजीरे लिये हुए गाँव के नौजवान, बूढ़े, सब मस्त होकर गा रहे थे—

'मालिक सीताराम,
छोट्-मन काहे कियो !'

—'मालिक तो सबका सीताराम है, फिर मन छोटा क्यों करते हो ?' ग्रामराज का मर्म गाँववाले समझ गये थे, यह लोकमानस की भावना को प्रगट करने वाले इस सीधे-सादे गाने से जाहिर हो रहा था। गाने के बाद गाँव के हर परिवार के एक-एक व्यक्ति ने, जिनमें कुछ स्त्रियाँ भी थीं, उठ कर अपनी सरल भाषा में अपना संकल्प बताया। सबके कहने का सार करीब-करीब एक-सा ही था—"हम गाँव के सब भाई-भाई मिल गये हैं। ग्रामराज का-गाँव का-काम सब मिलजुल कर करेंगे और पूरी ताकत लगायेंगे। आप लोग भी हमें मदद कीजिये !"

* * *

शाम की प्रार्थना का समय हो गया था। सूरज ढल रहा था। श्री धीरेन्द्र भाई के आशीर्वचन के बाद सब लोग प्रार्थना के लिए शांत होकर बैठ गये। ग्रामदान की स्थापना के मंगल संकल्प की पूर्णाहुति ईश-स्मरण से बढ़कर और क्या हो सकती थी ! शान्त वातावरण में प्रार्थना का स्वर गूँज उठा—

"ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत् !"

'ईश्वर सारे जगत् में व्याप्त है, यह सब कुछ उसीका है'—इस ऋषिवचन की अनुभूति जैसी आज मन में हुई, वैसी शायद पहले कभी नहीं हुई थी। उपनिषद् के उस ऋषि की भावना ही क्या 'मालिक सीताराम' इन सीधे-सादे शब्दों में ललमटिया गाँव के लोगों के मुँह से प्रगट नहीं हुई थी ? निश्चय ही दोनों एक ही, और एकमात्र सनातन सत्य की अभिव्यक्ति हैं !

सचमुच 'मालिक सीताराम' है ! फिर मनुष्य इतना छोटा दिल क्यों रखता है कि उसकी सृष्टि पर अपनी मालकियत ही जाहिर करता है ?

प्रार्थना के बाद सभा बिखर गयी ! लोग अपनी-अपनी जगह चले आये। ललमटिया के लोगों का स्वर अब भी कानों में प्रतिध्वनित हो रहा था—

'मालिक सीताराम, छोट्-मन काहे कियो !'

—

सत्तावन् रे साल री

आओ भाई बात बतावें सत्तावन रे साल री।
धन और धरती बाँटो भाई मंशा है इण साल री॥
(भूमिदान दो, भूमि बाँट लो, ग्रामदान दो, ग्रामराज लो)
इण धरती रे खातिर जग में मुलक मुलक सुं अड़ता हा।
इण धरती रे खातिर जग में महाराजा राजा लड़ता हा॥
जमींदार जागिरदारां सुं करसा करसा भिड़ता हा।
आंगळ आंगळ धरती खातिर आपस में कट मरता हा॥
घर घर आज छिड़ गई लड़ाई धरती रे धणियाप री।
छोड़ धणापो बाँटो धरती मंशा है भूदान री। भूमिदान दो॥ १॥
भूमि रो भगवान धणी क्यों झूठो थे धणियाप करो।
धन धरती री माया में फँस आपस में क्यूँ कटो मरो॥
जो सुख चावो जीवण रो तो बँटवारो थे आज करो।
सब धरती माता रा बेटा आपस में मिळ प्यार करो॥
जण जण रो झगड़ो मिट जासी धरती गाँव समाज री।
ग्रामदान री करो तियारी मंशा है भूदान री। भूमिदान दो॥ २॥
आपस में धन धरती बाँट्यां सारो झगड़ो मिट ज्यासी।
गाँव गाँव रो एक कुटुम्ब बण सेंण सभी रा हो ज्यासी॥
सब का दुख में दुख पावांला सब का सुख में सुख पासी।
घांणी बेजा चर्चा चलसी धन गाँवाँ में बढ़ ज्यासी॥
गाँवाँ ने गोकुळ कर देशी मेहनत सब इंसान री।
पढ़ लिख खेती धन्धा करसी कमी न रहसी शान री॥
(भूमिदान दो, भूमि बाँट लो, ग्रामदान दो, गाँवराज लो)

—बद्रीप्रसाद स्वामी

www.vinoba.in

भूदान-यज्ञ

८ मार्च सन् १९५७

लोकनागरी लिपि *

'सख्य-भक्ती' की अुपासना का आंदोलन !

(वीनोबा)

हम कारुण्य से भी अेक कदम आगे बढ़ना चाहते हैं । वैसा नहीं करेंगे, तो बुद्ध भगवान् का अवतार व्यर्थ ही हुआ, अैसा माना जायेगा । लोगों को हम केवल कारुण्य ही नहीं समझाते हैं ; कारुण्य के साथ, अुससे भी आगे जाकर, समत्व भी सीखाना चाहते हैं । मैं अूंची जगह रहता हूं, आप नीची जगह रहते हैं । आपका दुःख मैं देख रहा हूं, आपको सुखी करने की मैं कोशीश करता हूं । परंतु अुसके लीअे मैं अपना स्थान नहीं छोड़ रहा हूं । हां, आपको अुठाने के लीअे जरा झुकता हूं । यह है करुणा । यह भी अेक बहुत बड़ा गुण है, बहुत भारी वस्तु है । अूंचे स्थान में रह कर दुखीयों के वास्ते दील सीसकता है, हृदय झुकता है, नीचे वाले मनुष्य को अुठाने की वह कोशीश करता है । यह मातृ-वात्सल्य है । माता बच्चे को अुठा कर अपनी गोद में लेगी । फीर भी माता माता है, बच्चा बच्चा है । माता की योग्यता बच्चों को हासील नहीं है । माता करुणा की मूर्ती जरूर है ; परंतु कारुण्य से भी आगे जाकर हम सख्य-भक्ती लाना चाहते हैं । चाहते हैं की दोनों ही सखा बनें, मालीक-मजदूर भेद ही मीटे ।

कुचेलन भगवान् श्रीकृष्ण से मीलने के लीअे, कुछ प्राप्त होगा अैसी आशा से, गये थे । वे मांगना तो नहीं चाहते थे, परंतु पत्नी ने कहा, "तुम्हारा मीत्र है, मांग कर देखो !" वे गये । चौकीदार ने दरवाजे पर रोका । कुचेलन ने कहा, "कृपा कर जाकर मेरा नाम कहो । अगर अुन्होंने ना कहा, तो मैं वापीस जाअूंगा ।" चौकीदार अंदर पूछने के लीअे गया । सुनते ही कृष्ण दौड़ कर आये, आकर आलींगन दीया, अुसको अंदर ले आये और जीस आसन पर वे बैठते थे, अुसी आसन पर अुनको बैठाया ।

यही करुणा के आगे की बात है । केवल करुणा अुत्पन्न होती, तो प्रेम से धन देकर अुसे वापीस भेजना ही काफी था । यह जरूरी नहीं था की अपने खुद के आसन पर अुसे बीठाते—अुस आसन पर, जीस पर लक्ष्मी बैठती थी ! लक्ष्मी की तरह ही अुसे बीठाया ! अीसीलीअे भगवान् कृष्ण का नाम हींदुस्तान में घर-घर लीया जाता है । यह करुणा से बढ़कर गुण है । यही ग्रामदान के द्वारा हमें साधना है ।

(कुंड्रकुडी, रामनाड, तंजाअूर, १६-२-५७)

* लिपि-संकेत : ि = ी ; े = ॆ ; ख = ख ; संयुक्ताक्षर हलंत-चिह्न से ।

नौजवानों को क्रांति पुकार रही है !

(जयप्रकाश नारायण)

आज संसदीय जनतंत्र (पार्लमेंटरी डेमोक्रैसी) कई देशों में चली और चल रही है, फिर भी उसके नतीजे संतोषजनक नहीं निकले हैं। राजनैतिक संगठन के कारण सत्ता में शक्ति केन्द्रित होती जाती है। समाजवादी देशों की भी यही हालत है। जहाँ-जहाँ समाजवादी आर्थिक प्रयोग हो रहा है, वहाँ भी आर्थिक और राजनैतिक शक्ति का केन्द्रीकरण होता जा रहा है और अफसरशाही उसमें से पैदा हो रही है। साम्यवादी देशों में तो एक ही पक्ष का राज्य और अधिनायकशाही है। इधर जरूर पोलंड और युगोस्लाविया के लोग बुनियादी विचारों का फिर एक बार परीक्षण कर रहे हैं, पर आप हंगेरी के उदाहरण से देख सकते हैं कि बहुमत साम्यवाद के विरुद्ध है, तो भी अल्पमत, लोकतंत्र के नाम पर अधिनायकशाही ही रखना चाहता है। शोषण का अंत, भ्रातृत्व, सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक स्वतंत्रता, समता, ये सब ऊँचे आदर्श गौण पड़ गये हैं ! ये न संसदीय जनतंत्र में, न समाजवादी तंत्र में, न साम्यवादी तंत्र में; किसीमें भी दृष्टिगोचर नहीं होते। अतः विश्व के सामने प्रश्न है कि आखिर कौनसा मार्ग अपनाया जाय, जो समस्या का वास्तविक हल हो ?

राष्ट्रपिता गांधीजी ने इसीकी बुनियाद काँग्रेस के विघटन की घोषणा और उसकी जगह पर लोकसेवक-संघ की स्थापना के रूप में डाल दी थी। पर वह नहीं हो पाया। वे रहते, तो समाज को नये ढाँचे में अवश्य ढालते। उनके अधूरे कार्य को संपन्न करने विनोबाजी आये ! विनोबाजी ने तो गांधीजी की तरह अधिकारपूर्वक काँग्रेस-संगठन को भंग करने को भी नहीं कहा, वरन् अपना कार्य नीचे से आरंभ कर दिया। पाँच-छह वर्षों की भूदान की सफलता के साथ साथ दो हजार गाँवों में ग्रामदान का प्राप्त होना दुनिया में भूक्रांति का अद्भुत उदाहरण है। ग्रामदान याने भूमि के स्वामित्व का ही विसर्जन। अभी तक न कोई साम्यवादी, न कोई समाजवादी, न कोई विधान-सभा और न कोई संसद, ऐसा करने में समर्थ हुए हैं। साम्यवादी और समाजवादी देशों के सामने बा-हुनर (Skilled) और बे-हुनर (Unskilled) मजदूरों के मजदूरी के भेद का ही प्रश्न अभी मौजूद है। उस भेद का हल राष्ट्रीयकरण भी न कर सका। आज भी मजदूरी में महान् अंतर है। यह कैसा जनतंत्र है, जहाँ मुट्ठी भर लोगों का जीवन-स्तर ऊँचा रहे और अधिकांश की हालत दयनीय रहे ?

भूदान जैसी क्रान्ति दुनिया में अभी तक नहीं हुई है। यह क्रान्ति बिना दबाव, बिना आक्रमण के स्वेच्छा से चल रही है। जहाँ-जहाँ खूनी क्रांतियाँ हुईं, वहाँ मालकियत की समस्या अब भी है। पर इधर ४५ लाख एकड़ जमीन का प्राप्त होना और २ हजार गाँवों में ग्रामदान क्या छोटी चीज है ? इतने में ही विनोबाजी अमर हो गये हैं। क्या कानून बनाने वालों का १० वर्षों से किसीने हाथ रोका था ? कोई भी राजनैतिक पक्ष हिंमत के साथ क्या यह कह सकता है कि हमने एक गाँव में भी ग्रामदान कराया है ? पर हमारे मूल्य बिगड़े हुए हैं और वे इतने उलटे हैं कि इस अभूतपूर्व घटना की चर्चा भी नहीं होती है ! इसके विपरीत, अगर २०० नहीं, २० गाँवों में भी खूनी क्रांति से जमीन पर भूमिहीन कब्जा करते, तो भारत ही नहीं, विश्व के अखबारों में चर्चा होती। ऐसे हमारे मूल्य हैं !

विनोबाजी तो इस क्रांतिकारी वर्ष में क्रांति का प्रथम चरण पूरा करना चाहते हैं। जमीन तैयार है, हवा में इस वर्ष कुछ गुनगुनाहट है। हम भी सपना देख रहे हैं कि गाँवों से भूमिहीनता मिटेगी और ग्रामराज्य होगा। बीजारोपण हो चुका है। फसल तैयार है, इसे काटना है। यह हमारे और आपके द्वारा होगा। स्वराज्य-प्राप्ति के बाद त्याग की आवश्यकता अधिक बढ़ गयी, पर आज होनहार युवक स्वराज्य के रसास्वादन में ज्यादा प्रवृत्त हैं। नौकरशाही से नये भारत का निर्माण कदापि नहीं हो सकता। अगर ऐसा होता, तो बापू ने प्रत्येक गाँव से सेवकों का आवाहन स्वराज्य के निश्चय के बाद क्यों किया होता ? इसलिए मैं आप सबको इस पुनीत और महान् अहिंसक क्रांति के लिए आवाहन कर रहा हूँ। यह क्रांति प्रेम की क्रांति है, इसका मिलान अन्य क्रांतियों से नहीं। इसी प्रकार सन् '२२ में असहयोग के आवाहन के कारण हजारों नौजवानों ने कॉलेज छोड़ दिये थे और वे ही स्वराज्य की नींव डाल चुके थे। इस एक वर्ष में कॉलेज छोड़ने से हानि नहीं, आपको लाभ ही होगा। बहन और भाई, दोनों कंधे से कंधे मिला कर बढ़ें, क्योंकि दो पहिये से ही गाड़ी चलेगी !

आज विश्व-शांति की बात की जाती है। कोई कहता है, आणविक बम का नियंत्रण किया जाय, तो कोई निःशस्त्रीकरण का कहता है। गांधी के भारत से

www.vinoba.in

पुरुषार्थ को आवाहन !

एक पत्र :

पूज्य बाबा,

प्रणाम ! हमें यह सूचित करते हुए खुशी होती है कि इस बार पंजाब में सर्वोदय-मेला (१२ फरवरी) पर १,७६,६२३ (एक लाख, छिहत्तर हज़ार, छह सौ तेईस) गुंडियाँ सूत मिला है।...हमारी कुल आबादी १,६१,००,००० है।

खादी-ग्रमोद्योग-विद्यालय, समालखा, आपका
करनाल, १८-२-'५७ उदयचंद

उत्तर :

श्री उदयचंदजी,

सूत्रांजलि का जो काम इस वक्त पंजाब में हुआ, उसके लिए मैं वहाँ के कुल कार्यकर्ताओं को धन्यवाद देता हूँ। कार्यकर्ता जुट जाते हैं, तो जनता किस प्रकार जवाब देती है, उसका यह एक नमूना है। मैं तो मानता हूँ कि हमारा कुल काम श्रम-आधारित होना चाहिए और देश में आज उसके लिए हवा तैयार है। सूत्रांजलि में जो शक्ति छिपी हुई है, उसका भान अभी कार्यकर्ताओं को ठीक नहीं हुआ है। हम शोषण-रहित और शासन-मुक्त समाज बनाना चाहते हैं। यह चीज तभी होगी, जब सबका जीवन श्रम-आधारित होगा और परस्पर-सहयोग की वृत्ति बढ़ेगी। भूदान-यज्ञ में संचित निधि से मुक्त होने की और साथ-साथ तंत्रमुक्ति की भी, बात हमने छेड़ी है। उस हालत में कोई वजह नहीं कि हम सब सर्वोदय-प्रेमी हमारे कुल काम को कांचन-मुक्त क्यों न करें ? सूत्रांजली की एक-एक गुण्डी याने सर्वोदय के लिए वोट माना गया—ऐसा वोट, जो कि देने का अधिकार बच्चों तक को हासिल है। तो, चुनाव के वोटरों की लिस्ट से हमारे वोटरों की लिस्ट बढ़ जाती है। यह सब पुरुषार्थ का विषय है। लोग सन् सत्तावन् में क्रांति की राह देख रहे हैं। उसकी शुरुआत तो वर्षारंभ से ही हो चुकी है। वर्ष के अंत तक हमारे जीवन में हम क्रांति लावेंगे, तो देश का काया-पलट होने में देर नहीं लगेगी।

पड़ाव-कुटुपट्टी, मदुराई —विनोबा
२४-२-'५७

नौजवानों को क्रांति पुकार रही है !

यह अपेक्षा की जाती है कि एकपक्षीय निःशस्त्रीकरण की घोषणा वह करे, पर नेहरूजी ऐसा नहीं करते। सच्चे विश्वमंगल की नींव भूदान की सफलता से पड़ेगी। मैं आशावादी हूँ। मुझे विश्वास है कि मानव वैज्ञानिक अस्त्रों से अपना विनाश न करेगा। विश्वकल्याण का एकमात्र मार्ग सर्वोदय ही है। गांधी और विनोबा के रास्ते के अलावा विश्वशांति का दूसरा कोई मार्ग नहीं है, यह मैं दावे के साथ कहना चाहता हूँ।

तो मित्रो, ऐसा अवसर हमारे और आपके सामने आया है, जिसे राष्ट्र की पुकार, भारत माता की पुकार समझना चाहिए। इसी प्रकार का अवसर असहयोग के समय सन् '२२ में आया था और जिन छात्रों ने मौलाना आज़ाद के आवाहन पर पटना-कॉलेज की पढ़ाई त्याग दी थी, वे आज भी अग्रणी हैं। मैं जो कुछ बन पाया हूँ, उस अवसर से ही, ऐसा महसूस करता हूँ। उस समय तो एक वर्ष का प्रश्न नहीं, जीवन का ही प्रश्न था। अतः एक वर्ष के त्याग से आपको कोई हानि नहीं, बल्कि जो आप इस अनुभव से ज्ञान प्राप्त करेंगे, वह कॉलेज की शिक्षा से सैंकड़ों गुणा महत्त्वपूर्ण होगा। आप निःसंकोच मैदान में आगे आयें। आपके सहयोग से अहिंसक क्रांति अवश्य सफल होगी।

इस क्रांतिकारी वर्ष में मैं आपका आवाहन करने के लिए ही यहाँ उपस्थित हुआ हूँ।*

---

*नागपुर-विश्वविद्यालय के कुलपति श्री नियोगीजी की अध्यक्षता में नागपुर में हुई छात्र-सभा का भाषण। —सं०

ग्रामदानी गाँवों के कर्ज़ का प्रश्न

(दामोदरदास मूँदड़ा)

ता० १७ को सर्वोदय-मंडल की सभा हुई, जिसमें तिरुमंगलम् तालुका के ग्रामदान के कार्य में आने वाले अनुभवों की चर्चा हुई। सभा में प्रांत के सभी प्रमुख कार्यकर्ता थे, जिन्होंने अपना-अपना अनुभव सुनाया। कर्जे का सवाल जहाँ-तहाँ काफी परेशान करता नजर आया। विनोबा ने मार्ग-दर्शन करते हुए पूछा—"आज आप तालुके की बात करते हैं। परंतु कल सारे भारत-दान की बात होगी। फिर क्या सोचेंगे कर्ज़े के बारे में ? कर्जे की बात भी उस-उस स्तर पर सोचनी होगी। माता-पिता के हाथ का कर्ज़ा चुकाने की जिम्मेवारी बच्चे पर है। कोशिश भी उसकी ओर से की जावेगी। लेकिन हमें सब बातों का विचार एक संदर्भ में करना है। दो-चार गाँवों की बात नहीं है। जहाँ पूरे तालुके की बात है, वहाँ आप कर्ज़ों का कहाँ तक सोचेंगे ? कर्ज़ा तो स्टेट पर भी है ! परमेश्वर के नाम पर जिसने अपना सब कुछ समर्पण कर दिया, उसका सभी ऋण समाप्त हुआ। समुद्र का स्नान किया, तो क्या फिर नदियों का स्नान बाकी रहता है ? फिर, जिसका कर्जा है, वह भी तो हमारे आंदोलन का हिस्सा ही है न ? कर्जा चुकायेंगे नहीं; ऐसा हम नहीं कहते। परंतु जिसने कर्जा दिया है, उसे भी मौका देना चाहिए। उसको भी कर्जा छोड़ देने की प्रेरणा नहीं होगी, ऐसा नहीं मानना चाहिए। वैसा मानना उसके प्रति अन्याय होगा। हम सब पैसे की परिभाषा में सोचते हैं, इसीलिए सारा बिगड़ रहा है। कर्जा देने वाले का उपकार तो है ही, परंतु पैसे के रूप में जो कर्जा लिखा गया है, वह बहुत कम है। श्रम के रूप में मजदूरों का जो कर्जा है, वह बहुत ज्यादा है।"

कर्जे का भय कार्यकर्ता के सिर से पूरी तरह हटाने की इच्छा से बाबा ने अपनी मिसाल देकर समझाया कि 'देखो, पेट में तकलीफ हुई, दूसरे रोज पाँव तैयार नहीं थे; पर चलना तय हुआ, तो पाँव भी राजी हो गये ! तालुका-दान होगा, तो कर्जेवाले भी राजी हो जावेंगे। पुराना कर्जा तो वे भूल ही जावेंगे—सर्वस्व-दान के लिए भी राजी हो जावेंगे।"

कार्यकर्ताओं के परिवार की कुछ दिक्कतें सुनीं, तो कहा : "ऐसे लोग अपने परिवार को लेकर निकल पड़ें, तो बाहर-भीतर, दोनों 'फ्रंट' पर 'अटैक' कर सकेंगे। अर्जन्सी महसूस होगी, तभी काम शीघ्र होगा !" अंत में पुनः एकबार कर्जे का सवाल छेड़ कर चर्चा को समाप्त करते हुए कहा :

"गाँव वाले बच्चों को अनाथ बनाते जायँ और संन्यासी अपने पर अनाथालय आदि चलाने का भार स्वीकार करके अहंकार का बोझ उठावें, यह जैसा गलत है; वैसे ही यह कर्जे का मामला है। सरकार समस्याएँ निर्माण करती जायँ, लोग कर्जा निकालते चले जायँ और सबको जिम्मेवारी हम उठाते जायँ, सबकी चिन्ता करें, यह कैसे सम्भव है ? इस सबके मूल में मालकियत है। इसलिए जैसे हम जमीन की मालकियत मिटाने की बात करते हैं, हम कर्जे की मालकियत मिटाने की बात भी क्यों न करें ? हमें भूलना नहीं चाहिए कि हम लोग बहुत थोड़े हैं और हमारे विरुद्ध एक आर्थिक विचार-प्रवाह (इकॉनॉमिक थॉट) जोरों से चल रहा है, जिसकी पकड़ समाज पर है। अतः यह याद रखो कि खतरा थोड़े-थोड़े गाँवों में काम करने में है। अगर हम पाँच लाख गाँवों में काम करें, तो सरकार भी बदल सकती है। इसके विपरीत कहीं हम पाँच-पचास गाँवों में काम करके संतोष मान लें, तो सरकार खुश हो जावेगी, हमें सहायता भी करेगी, परंतु हमारा काम खत्म हो जावेगा। आखिर सरकार या संस्थाएँ कितने गाँवों की मदद कर सकती हैं ? इसलिए हमने कहा था कि हम तो सवाल पैदा करते चले जावेंगे। कर्जे का सवाल पैदा होगा, तो एक अखिल भारतीय सम्मेलन होगा और वह इस समस्या के बारे में सोचेगा। अब तक एक-एक व्यक्ति साहुकारों से व्यवहार करता था, अब पूरा गाँव बरतेगा, सरकार को भी रवैया बदलना होगा। मान लीजिये कि एक लाख गाँवों में खादी का संकल्प होता है, तो क्या सरकार को कपड़े की आज की नीति पर उसका असर नहीं पड़ेगा ? हमें अपने काम से वर्तमान सरकार पर भी कुछ असर करना है या नहीं ? या एकाकी हवा में ही काम करते रहना है ?"

लोकसत्ता और हिंसा की संगति हो नहीं सकती। आज की सरकारें, जो नाममात्र के लिए जनतंत्री हैं या तो उन्हें तानाशाह बनना होगा, या सच्चे अर्थों में जनतंत्री, जिसके कि लिए हिंमत के साथ उन्हें अहिंसा की दीक्षा लेनी होगी। अहिंसा का आचरण सिर्फ व्यक्ति ही कर सकते हैं, उन व्यक्तियों के बने हुए मुल्क नहीं, यह कहना तो निरी नास्तिकता मात्र है। —गांधीजी

www.vinoba.in

तमिलनाड़ की क्रांतियात्रा से

(दामोदरदास मूंदड़ा)

रामनाद जिले में प्रवेश करते समय कार्यकर्ताओं ने ७५६ एकड़ जमीनवाले छह ग्रामदान भेंट किये। इसके सिवा दो हजार दाताओं से प्राप्त ७२५७ एकड़ जमीन के दानपत्र भी। मुकाम अक्सर मठों में या तो मंदिरों में रहा। स्वच्छ, सुन्दर, प्रसन्न वातावरण, इर्दगिर्द पहाड़ियाँ। पहाड़ों पर भी मन्दिर। ···इर्दगिर्द भूख, दरिद्रता और अनेकविध दुःख दिखायी देने पर भी मठों और मंदिरों में गरुड़ आदि वाहनों पर विराजमान मूर्तियों में ही ईश्वर मानने वाले धर्मगुरुओं को व उन पर निर्भर भक्तजनों को जाग्रत करके धर्मचक्र-प्रवर्तन का अपना कार्य विनोबा अपनी सारी धर्मभावना से अभिभूत होकर किये जा रहे हैं। जहाँ-तहाँ अनेकविध दीप-ज्योतियों को देख कर उन्होंने कहा : "वेदारण्यम्-मंदिर की ज्योति सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है न? लेकिन सर्वश्रेष्ठ ज्योति कहाँ है? वह हृदय में है। प्रयत्न करेंगे, तो हम सभी सूर्य के समान ज्योति प्रगट कर सकेंगे।"

भूदान-ग्रामदान-आंदोलन होगा, तो वर्णाश्रम-धर्मों का क्या होगा, ऐसा प्रश्न अक्सर मठाधिपति उठाते रहते हैं। बाबा ने उस रोज जो भाषण* दिया, उनका पिछले कुछ वर्षों का चिंतन ही उसमें समाया है। अपने लिए मैंने उसे इस तरह लिख लिया है :

ग्रामदान

गुणविकास	वर्ण	आश्रम
शम :	ब्राह्मण	संन्यास
दम :	क्षत्रिय	वानप्रस्थ
दया :	वैश्य	गृहस्थ
श्रद्धा :	शूद्र	ब्रह्मचर्य

स्वामी कुंड्रकुडि, जिन्होंने उत्साह और प्रेमपूर्वक यात्रा का सारा प्रबंध-भार उठाया था, इस चेतन स्पर्श से अछूते नहीं रह सकते थे। व्यक्तिगत सत्याग्रह के समय जब प्रथम बार बापूजी ने विनोबा को प्रथम सत्याग्रही के रूप में संसार के समक्ष उपस्थित किया था, तभी से एकलव्य की भाँति उन्होंने विनोबा को मन ही मन स्वीकार लिया था। आज तो संत स्वयं उनके द्वारे उपस्थित था! ऐसे समय स्वामीजी के हृदय-कपाट परिपूर्ण रूपेण मुक्त हो चुके हों, तो आश्चर्य नहीं। स्वयं निःशंक होते हुए भी जनता की दृष्टि से स्वामीजी ने कुछ बातों पर स्पष्टीकरण भी करवा लिया।

स्वामीजी—"आज तो आपने वेद-ग्रन्थों के बारे में भी सारासार विवेक करने की तथा आवश्यकतानुसार नये विचारों से उनमें संवर्धन करने की बात कही। तो क्या सिर्फ नया विचार जोड़ना काफी नहीं है? क्या पुराने विचारों को अछूता नहीं रखा जा सकता?"

विनोबा—"नहीं। दोनों कार्य आवश्यक हैं। नया विचार जोड़ने के लिए तो आप राजी ही हैं। परंतु वेदों में पुरानी बातें जितनी हैं, उतनी सब उन ऋषियों की ही हैं, उनमें प्रक्षिप्त कुछ नहीं हैं, इसकी क्या गैरंटी है? व्यास भगवान् ने एक लाख श्लोक लिखे। क्या वे सब उन्हींके हैं? इसके लिए कोई कसौटी तय करनी होगी! वह कसौटी उन्हीं ऋषिमुनियों ने हमें बतायी है—सत्य, प्रेम, करुणा आदि की। अब अगर इसके विपरीत कोई विधान हो, तो उसका स्वीकार कैसे किया जा सकता है? उदाहरण के लिए 'मांस' को लीजिये। मनुस्मृति में मांस का जिक्र है। मनु कहता है—मां याने मुझे, सः याने वह खा खायगा। याने यदि मैं बकरा खाता हूँ, तो बकरा भी मुझे खाने वाला है। अब इतने स्पष्ट शब्दों में मांसाहार का निषेध जिस मनुस्मृति में किया गया है, उसीमें पक्षी-विशेष के मांस खाने की छूट भी रखी गयी है। ऐसे शब्दों का क्या करेंगे? उन्हें फेंकना ही होगा।"

स्वामीजी—"सत्य-प्रेम-करुणा आदि की कसौटी बाह्य है या भीतरी?"

विनोबा—"मुख्यतया भीतरी। हम यह नहीं कह सकते कि बकरे को खाने में करुणा है। इसलिए यदि मनुस्मृति में बकरे के मांस का विधान हो, तो वह गलत समझ कर छोड़ देना चाहिए।"

प्रश्न : "हर शख्स अगर कोशिश करे कि अपने अनुकूल बातों का संग्रह करें और दूसरी बातें त्याग दें, तो अनर्थ नहीं होगा?"

उत्तर : "अपनी अनुकूलता का सवाल ही नहीं—हमारी कसौटी की अनुकूलता का है। सत्य, प्रेम, करुणा, अहिंसा—यह जो कसौटी हमें बतायी गयी है, और जो उन्हीं ऋषियों द्वारा बतायी गयी है—तदनुकूलता का है!"

प्रश्न : "नये तत्त्वों और नये विचारों को प्रतिपादन करते समय पुराने विचारों का खंडन न करें, तो?"

उत्तर : "खंडन न करना और बात है; परंतु सामने वाले के दिल में भ्रम बैठ गया हो, तो वह गलत है। पुराने साहित्य में पुराणकार की दृष्टि खोजनी चाहिए। माणिक्यवाचकर ने सियार से घोड़ा बनाया, इस बात को कोई नहीं मानेगा। अतः उसका लाक्षणिक अर्थ ही निकालना चाहिए। इससे लोगों में भ्रम पैदा होता है कि सत्पुरुषों में चमत्कार की शक्ति होती है और जो चमत्कार करेगा, वही संत, ऐसा हम कहते हैं—यह गलत है। इसे दूर करना चाहिए।

प्रश्न : "यह आपकी बात ठीक है। परंतु आपने तो आज प्रवचन में सारासार विचार की मिसाल देते हुए यज्ञ में अब तक जो घी की आहुतियाँ दी जाती हैं, उसका भी निषेध किया। हम मानते हैं कि वह आपका दृष्टिकोण भी यथार्थ है। पर इससे सनातनी लोग चिढ़ जाते हैं और टीका करते हैं।"

उत्तर : "मुझसे यह प्रश्न पूछा गया था—बम्बई में होने वाले लक्षचंडी-यज्ञ के सिलसिले में। वहाँ मनों घी यज्ञ के निमित्त खर्च होने वाला था और हुआ भी। मैंने जवाब दिया कि यज्ञ करने-कराने वाले सद्बुद्धि से कर रहे हैं, पर यह पाप हो रहा है। इस पर सनातनी लोग बहुत बिगड़े। मैं भी नाहक खंडन नहीं करता; परंतु जो सही बात है, वह कहना ही होगा। मैंने कहा और टीका के बावजूद भी भूदान तो मुझे मिल ही रहा है! हमें सिर्फ दो तत्त्व संभालने चाहिए : एक सत्य, दूसरा अहिंसा! सत्य की रक्षा होनी ही चाहिए। सत्य बोलने का मौका आवे, वहाँ बोलना ही चाहिए।"

जीवन के भिन्न-भिन्न क्षेत्र में जो जातिभावना प्रगट हो रही है, उस पर विस्तार से चर्चा होने पर उन्होंने समझाया—

"इस सबके मूल में जाति-भेद है। उसीको काटने की कोशिश करना चाहिए। राजनैतिक पक्षवाले जातिभावनाओं का उपयोग कर लेते हैं। राममोहनराय से लेकर गांधीजी तक सबने जाति-भेद पर प्रहार किया; किंतु उसे अगर फिर से किसीने जीवन-दान दिया हो, तो इस चुनाव-पद्धति ने। इसलिए हम आजकल के चुनावों तथा राजनीति के खिलाफ़ आवाज़ बुलंद करते हैं। वह तो होगा तब होगा, पर हमें जाति-भेद मिटाने की कोशिश भी करना चाहिए। पोलिटिकल नेता जैसे चुनाव में जातियाँ देखते हैं, वैसे शादी, ब्याह में भी प्रायः सभी लोग जातियों का ख़्याल रखते हैं।"

प्रश्न : "पोलिटिकल-क्षेत्र में जातियाँ देखते हैं; वोट और द्वेष के लिए, परंतु शादी-ब्याह में तो जातियाँ देखते हैं, कुल-मर्यादा के लिए, जो स्वाभाविक दीखता है।"

उत्तर : "ये मर्यादाएँ हमने मानीं, इसीलिए ये लड़ाइयाँ होती हैं।"

प्रश्न : "यह तो वसिष्ठ के जमाने से चलता आ रहा है?"

उत्तर : "उसका अर्थ यही कि उसमें भी सार-असार विवेक करना होगा। शरीर की सभी इंद्रियाँ अच्छी हों और फेफड़ों में क्षय हो, तो आत्मा उस देह को छोड़ने की तैयारी करता है। उस शरीर में भी कुछ सार तो होता है, पर आत्मा उसे छोड़ देता है। आजकल डॉक्टर लोग मरे हुए आदमी की आँख आदि कुछ उपयोगी इंद्रियाँ निकाल रखते हैं, ताकि किसी दूसरे के काम वे आवें। उसी तरह जातियों में जो अच्छे गुण हैं, सिर्फ उन्हें सँभाला जाय। उस जाति-रूपी काया को अब कायम नहीं रखना चाहिए। शिक्षण में योजना ऐसी होनी चाहिए कि जातियों में जो वर्ण-धर्म का गुण है, वह तो कायम रह सके; परंतु विवाहादि के जातिगत निर्बन्ध टूटने चाहिए।"

प्रश्न : "विवाह के लिए संस्कार-स्वभाव देखा जाता है न? इसीलिए जाति का बंधन माना गया है।"

उत्तर : "दशरथ के परिवार में कैकेई और रावण के परिवार में मंदोदरी निकली! रावण-कुल की मंदोदरी राम के कुल में आ सकती है या नहीं?"

प्रश्न : "वैयक्तिक गुण देखा जाय या जाति-मर्यादा?"

विनोबा : "आप ही बताइये!"

स्वामीजी—"गुण ही देखना चाहिए—"

स्वामीजी तो गद्गद हो गये! तमिलनाड़ में स्वामीजी की बड़ी शक्ति मानी जाती है। रामनाद ज़िले की यात्रा में स्वामीजी की यह देन भूदान के लिए एक विशेष फलश्रुति मानी जायगी!

---

* यह भाषण भूदान के ता० १ मार्च के अंक में छप गया है। —सं०।

www.vinoba.in

खादीग्राम-श्रमभारती : क्रांति के पथ पर—

(दादाभाई नाईक)

ता० २२ फरवरी,'५७ शुक्रवार की अपराह्न वेला। घण्टानाद होने लगा। अपने-अपने दैनिक कार्यों में व्यस्त हम लोगों को उसने जगाया। घड़ी देखी, तो पाँच बजे थे। सहसा स्मरण आया पू० बापू का। उन्होंने इसी समय दुनिया से बिदा लेकर ब्रह्म-निर्वाण प्राप्त किया था। आज माता कस्तूरबा का भी तो प्रयाण-दिन है! ऐसा दिन, ऐसी वेला महान् और गंभीर भी होती है। सारा श्रम-भारती-परिवार एकत्र होने लगा-सभागार में। आज श्रमभारती के अधिकांश व्यक्ति सत्-आवन की क्रान्ति के दूत बन कर जाने के लिए श्रद्धेय धीरेन्द्रभाई का आशीर्वाद और मार्गदर्शन चाहते थे। सूत्र-यज्ञ से कार्य आरंभ हुआ। फिर मौन और तत्पश्चात् प्रार्थना। पुरुष, स्त्रियाँ, बालक, गाँव के बच्चे, सभी एकाग्र बन बैठे थे। धीरेन्द्रभाई ने आशीर्वचन दिये।*

दूसरे दिन प्रातः जहाँ देखें, वहीं चहल-पहल। सारा कारोबार समेट कर हरएक अपनी पदयात्रा की तैयारी कर रहा था। हरएक स्वावलम्बी था। बीमार आचार्यजी से लेकर पैदल चल सकने वाले नन्हे बच्चे तक, हर कोई अपनी "औक़ात" के मुताबिक असबाब लिये प्रस्तुत था।

साँस-साँस में जीवन गुजरे पाँव बढ़ाये मंजिल,
प्रभु के हाथ बड़े बलशाली, कट जाती हर मुश्किल रे। कट०

स्मरण आया आजाद हिन्द फौज का, जो एक समय भारत की बन्धन-मुक्ति के लिए "कदम-कदम बढ़ाये जा, खुशी के गीत गाये जा" का उद्घोष करते बढ़ रही थी। वह मार्ग तो पुरानी परिपाटी का था। आज एक दिव्य मार्ग लिया जा रहा था, जिसमें केवल राजनैतिक ही नहीं, वरन् संपूर्ण बन्धनमुक्ति थी और वह भी विश्व के लिए। उसमें केवल यौवन को अवकाश था। यहाँ आबाल-वृद्ध, सबके लिए।

सत्-आवन में भूमिहीन, कोई न रहेगा, कोई न रहेगा।
सत्य-अहिंसा का यह देश; खून नहीं रे, प्रेम बहेगा॥

इस धुन में चराचर को आवाहन देते हुए सबने कदम बढ़ाये। लमेद ग्राम दीखने लगा। गाँव के सारे लोग स्वागतार्थ उत्सुक खड़े थे। बुलंद नारों से आसमान गूँज उठा। इसी समय प्रभु ने केवल सब पर मेघ-रूप वितान फैलाया। इधर श्री धीरेन्द्रभाई की वाणी और उधर प्रभु की कृपा का पानी बरसने लगा।

गाँव के अग्रणी ने स्वागत में कहा : "हम लोगों में से अधिकांश भाई, जो छोटे-छोटे किसान हैं, अपने भूमिहीन भाइयों के साथ अपनी जमीन बाँट लेने को तैयार हैं, यद्यपि हमारी जमीन बहुत कम है।" उनका यह अनुपम उदाहरण देख कर गाँव के अल्प-संख्य 'बड़ों' ने कहा कि "हम इसके खिलाफ नहीं हैं, पर हमारी हिम्मत नहीं होती, ऐसे क्रान्तिकारी परिवर्तन के लिए। हम यह सारा प्रयोग सहानुभूति से देखेंगे और जब हमें उसकी सफलता पर विश्वास हो जायेगा, तब हम भी सबमें शामिल होंगे।" मुखिया ने अन्त में कहा, "छोटे-बड़े, गरीब-अमीर, आपका आशीर्वाद चाहते हैं और प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि वह हमें बल दे—दृढ़ रहने तथा जो अभी अलग हैं, उनको सम्मिलित होने के लिए।"

कैसा अच्छा शुभ-लक्षण! पहली ही मंजिल, पहला ही मुकाम और ग्रामदान से प्रारंभ! भेद ने तो अभेद का रास्ता ही खोल दिया और यात्री-दल टोलियाँ बना कर बढ़ चला बरियारपुर की ओर। पाँच दलनायक अपनी टोलियों में कुल १२ स्त्रियाँ मय ६ छोटे बच्चों के, १२ पुरुष, २० छात्र और १३ छात्राओं को साथ लेकर भूदान-पदयात्रा के लिए निकले।

श्रम-भारती का वार्षिकोत्सव हो रहा था बरियारपुर में। पर इसमें भी औचित्य ही है। श्रमभारती कोई खादीग्राम की चार दीवारों में सीमित संस्था नहीं है। यह तो असीम विचारधारा है। वह एक जीवन और दर्शन है, जो संस्था-बद्ध न होकर ग्राम-ग्राम में ही नहीं, नगर-नगर में भी उन्मुक्त हो उठेगा। वार्षिकोत्सव के लिए आये थे श्री नवबाबू। श्री नवकृष्ण चौधरीजी का क्या परिचय दिया जाय! त्याग और सेवा ही उनका आनंद और नित्यकर्म, स्वधर्म है। राज्यपद से मुक्त होकर "मत्त गयन्द इव" वे उत्कल-वनवासी सेवक बन गये। अपना 'हैवर सैक' पीठ पर लादे एक हाथ में चरखा और दूसरी में बैग लिए वे जनसमूह में मिल जाते थे। कौन ऐसा अभागा होगा, जो उनसे प्रेरणा न पायेगा!

वार्षिकोत्सव के लिए बरियारपुर तथा इर्द-गिर्द के देहातों से भी लोग आये थे। चुनाव के दंगल के बावजूद अधिकांश राजनीतिज्ञ भी सभा में उपस्थित थे। "खादीग्राम का पदयात्री-दल मंच के पास बैठा था। एक ओर व्याधि-जर्जर, पर वर्ष भर की क्रांति-पदयात्रा के लिए दृढ़व्रती सौजन्य की मूर्ति आचार्य श्री राममूर्ति सिंहजी, दूसरी ओर श्री साधना बहन—जो कनाडा से भारत देखने आयीं और पू० विनोबाजी के आन्दोलन में पूर्ण रूप से घुलमिल गयीं—अपनी भारतीय वेशभूषा और लिबास में और उससे भी अधिक अपने मिलनसार स्वभाव के कारण।

थाना-काँग्रेस-कमिटी की ओर से श्री रामनारायणजी ने गद्गद होकर कहा कि चुनाव के कारण यद्यपि हम कुछ दिन आपका साथ न दे सकेंगे और इसकी हमें कुछ लज्जा और दुःख भी है, पर हम विश्वास दिलाते हैं कि चुनाव के बाद सत्-आवन का पूरा वर्ष हम आपके यात्रीदल का साथ देंगे।

अध्यक्ष श्री नवबाबू ने अपने भाषण में कहा : "मैं श्री धीरेन्द्रभाई के सामने एक प्राथमिक शाला के बालक जैसा इस क्षेत्र में हूँ और प्रेम के बल ही धीरेन्दा ने मुझे यह बुनियादी पाठ देने के लिए यहाँ बुलाया और उनकी आज्ञा शिरोधार्य मान कर मैं आपकी सेवा में उपस्थित हूँ। आपने मेरा भूतपूर्व मुख्य मंत्री के नाते उल्लेख किया। हम अनजान में कैसी गलती कर जाते हैं, इसका यह नमूना है! जब तक हम पर यह "पूर्व-भूत" सवार है, तब तक वर्तमान में आत्मविश्वास से विचरण कैसे कर सकेंगे? भविष्य का भाष्य तो दूर ही है! और क्या वह मेरा भूतपूर्व पद आज की स्थिति से उच्च है? हममें यह न्यूनभाव क्यों? और यदि नहीं है, तो फिर त्याग कहाँ? मुझे अनेक मित्रों के पत्र उस संदर्भ में आये। पर मुझ पर जिस एक पत्र का अच्छा असर रहा, वह उस समय भारत में आये हुए एक विख्यात अंग्रेज का था, जिसने मेरी तारीफ के पुल नहीं बाँधे, पर बधाई जरूर दी—इस वास्ते कि भारत में अपने ध्येय और विचारों के अनुसार मुक्त आचरण करने की राह मैंने ली। उसीमें मुझे आनन्द मिला और वही स्वान्तः सुख मेरा पारितोषिक है। आज आप लोग भी तो वही कर रहे हैं। ये छोटी-छोटी बालिकाएँ निकल पड़ी हैं, अपने संकुचित घरौंदों को छोड़ कर भ्रमण करने, शान्त-क्रान्ति का संदेश पहुँचाने के हेतु; वायु जैसा सुगंध दिगंत में पहुँचाता है, ठीक उसी तरह। हमारी भगवान् से प्रार्थना है कि वह हमें आत्मबल दे और हम विश्वशान्ति के सफल दूत सिद्ध हों।"

स्वागताध्यक्ष तथा सभापति श्री नवबाबू के भाषण के उपरान्त आचार्य श्री राममूर्त्ति सिंहजी ने अपना वार्षिक विवरण पढ़ कर सुनाया। श्रद्धेय धीरेन्द्र भाई ने क्रान्ति-यात्रा-पथिकों को आशीर्वाद* दिया। अन्त में सब यात्रियों को तिलक किया गया। क्रांति-पथिक चलने लगे। उस जुलूस में सबका ध्यान उन बालिकाओं की ओर बरबस जाता था, जो उम्र में सात-आठ वर्ष की थीं, कंधे पर झोला और हाथों में लालटेन-बाल्टी लेकर प्रयास करते हुए भी अन्य किसी से सहायता अस्वीकार कर जो प्रसन्न-वदन आज बढ़ रही थीं! तीन बरस की एक बालिका तो पैदल चलने का आग्रह रखे घसीटी जा रही थी। थक भी चली, पर हार मानने से इन्कार कर रही थी। आखिर बरबस उसे गोद में बिठाया ही गया!

* आगामी अंक में।

* पृष्ठ १ पर देखें।

विनोबा-कैंप में गीताई-जयंती

—ता० ६ फरवरी को 'गीताई' की जयंति हम लोगों ने मनायी! ता० ७ अक्टूबर को बाबा ने "गीताई" लिखना शुरू किया था और ता० ६ फरवरी को वह लेखन समाप्त हुआ था। इस घटना को आज सत्ताईस वर्ष हुए! सवेरे की प्रार्थना के बाद नाश्ते के समय तक यह कार्य बाबा करते। योजना भी यही थी कि चार माह में यह कार्य सम्पन्न हो। "गीताई" के निर्माण में अपनी परम पूज्य माता की प्रेरणा बहुत जबर्दस्त रही है, बाबा के लिए। उनकी माँग थी कि गीता का सरल अनुवाद लिखा जाय और वह उनका 'विन्या' लिखे। यह माँग उन्होंने तब की थी, जब विनोबा केवल १६ वर्ष के कुमार थे। तब से उनका चिंतन चलता था और पचीस वर्ष के चिंतन के बाद गीताई का जन्म हुआ। बापूजी ने एक पत्र में लिखा था—"गीताई सुनता हूँ, तो लगता है कि गीताई तो मूल है—और संस्कृत उसका अनुवाद है।"—बाबा ने स्वयं गद्गद होकर गीता-गीताई की महिमा गायी है। इस गीताई पाठ के निमित्त भी उन्होंने कहा, "इतने थोड़े शब्दों में जीवन का इतना समग्र दर्शन दूसरे किसी ग्रन्थ में मैंने नहीं पाया। भागवत् बहुत सुन्दर ग्रंथ है, मधुर है—भक्ति गंगा उत्तम बही है, परंतु गीता की परिपूर्णता उसमें नहीं है।" गीता के भाष्यों का भी जिक्र किया : "अब तक बहुत भाष्य गीता पर रचे गये हैं। स्वयं शंकराचार्य का भाष्य है। फिर भी कहना होगा कि हर एक ने अपनी दृष्टि से भाष्य किया है। परंतु मुझे 'ज्ञानेश्वरी' प्रिय है, क्योंकि गीता के इस विचार का एक कुशल चित्रकार की तरह परिपूर्ण सुंदर चित्र ज्ञानदेव ने खींचा है। वे हर विचार से उतने ही तद्रूप होते हैं।"

—दामोदरदास मूँदड़ा

www.vinoba.in

तमिलनाड़ की भूदान-यज्ञ-वार्ता

(मीरा व्यास)

श्री कुन्द्रकुडि अडिगळार रामनादपुरम् जिले के कुन्द्रकुडि गाँव के एक मठ के अधिपति हैं। यह मठ पिछले पाँच सौ सालों से चलता आ रहा है और शुरू से एक के बाद दूसरा ब्रह्मचारी ही इस मठ का अधिपति नियुक्त किया जाता है। सन् '५२ में श्री अडिगळार अधिपति नियुक्त किये गये। मैट्रिक की पढ़ाई के बाद गांधी-विचार से आकर्षित होकर तभी से समाज-सेवा में जीवन समर्पित करने का संकल्प उन्होंने अपने मन में कर लिया। उन्हींको मठाधीशपद सौंपने का सोचा गया। घरवालों को यह पसंद नहीं था। मठाधीश को सामाजिक कार्यों में हिस्सा नहीं लेना चाहिए, ऐसी शर्त मठाधिकारियों की तरफ से थी। स्वामीजी को यह शर्त मंजूर नहीं थी। आखिर उनकी इच्छा स्वीकार हुई और वे मठाधिपति बने। जब तक बड़े मठाधीश मौजूद थे, स्वामीजी आश्रम में ही अध्ययन करते रहे। उनके बाद, निर्माण-कार्य के बिना भक्ति-प्रचार अपूर्ण है, यह सोच कर अनाथाश्रम, शाला आदि शुरू की गयी। धर्म-प्रचारार्थ वे आग्नेय एशिया में भी बहुत दिनों तक घूमते रहे। उनके मठ की विशेषता यह है कि शैव-संप्रदाय के अनुसार उनके मठ के मठाधिकारी ब्रह्मचर्याश्रम से ही संन्यास लेते हैं। स्वामीजी पर मठ की जिम्मेवारी है, इसलिए वे अपना पूरा समय भूदान में नहीं दे पा रहे हैं। इसका उनको रंज भी है, परंतु योग्य उत्तराधिकारी न मिले, तब तक दूसरों के हाथ में बना बनाया मठ सौंपना वे उचित नहीं समझते हैं। खुशी की बात है कि महीने में पंद्रह दिन स्वामीजी का मठ संभालने की जिम्मेवारी उठाने वाले सेंगोल मड़तु स्वामीजी मिल गये हैं। कुन्द्रकुडि स्वामीजी गाँव-गाँव जा रहे हैं और ग्रामदान का विचार फैला रहे हैं और अधिकाधिक ग्रामदान लाते ही रहते हैं। विनोबाजी ने उनसे पूछा कि "आप ग्रामदान लाते हैं, तो लोगों को क्या समझाते हैं?" कहने लगे, "पूछता हूँ: आपके गाँव में ताले कितने हैं? गाँव में जितने ताले ज्यादा, उतना गाँव दुःखी, जितने ताले कम, उतना गाँव सुखी। ग्रामदान के गाँव में ताले की जरूरत ही नहीं पड़ेगी।" उनकी सादी-सी सहजगम्य करामात सुन कर सब खुश हो गये।

दोनों स्वामीजी के साथ बाबा की बातें बड़ी रोचक हुईं। संन्यास-धर्म क्या है, उसके बारे में समझाते हुए बाबा ने कहा:

"संन्यासी को व्यावहारिक बातों में जनता को मार्गदर्शन देना चाहिए। फलाना काम धार्मिक और फलाना काम लौकिक, ऐसा विभाग हम न करें। संन्यासी को करुणा और दया के कार्यों में एक मर्यादा में पड़ना चाहिए। संन्यासी को ऐसा सामाजिक काम नहीं उठाना चाहिए, जिसमें उन पर फंड इकट्ठा करने की या संस्था चलाने की कोई भी जिम्मेवारी आये। सूर्य गरमी देता है और प्रकाश देता है, परंतु वह भात नहीं पकाता है। भात पकाने का काम अग्नि का है। संन्यासी का काम सूर्यवत् है, अग्निवत् नहीं। भात पकाने का काम गृहस्थों का है, संन्यासी का नहीं। गृहस्थ अग्निवत् हैं। पुराने समय में तो संन्यासी को केवल धर्मग्रंथ ही पढ़ना चाहिए, ऐसा कहते थे। हम ऐसा नहीं कहते हैं। उसके अलावा लोकहित के काम में वह लोगों को प्रेरणा दे, समाज से सेवा का काम करवावे।

"बापू को व्यक्तिगत सत्याग्रह के लिए मेरी जरूरत थी। मुझे बुलाया गया। मुझे बुलाने का कारण भी मालूम नहीं था। उन्होंने पूछा कि 'व्यक्तिगत सत्याग्रह के लिए जाओगे? तुझे फुर्सत है?' मेरे पास काम तो थे, लेकिन जीवन ऐसा था कि मुझ पर उन कामों की ऐसी जिम्मेवारी नहीं थी कि मैं उसमें जाऊँ। मैंने उनसे कहा कि मैं तैयार हूँ। अगर आप ना कहें, तो मुझे वापिस जाने की भी जरूरत नहीं है। मैंने उनकी आज्ञा को यमराज की आज्ञा की उपमा दी थी। जिस क्षण यमराज बुलाता है, उसी क्षण हम तैयार रहते हैं। यह सुन कर बापू बहुत खुश हुए। अगर उस समय मैं कहता कि मुझ पर दूसरी कोई जिम्मेवारी है, तो बड़ा मुश्किल होता। ऐसे मेरे हाथ में काम तो बहुत थे। लेकिन मैं उन कामों की जिम्मेवारी से मुक्त ही रहा। मैं अभी यहाँ मर जाऊँगा, तो भी दुनिया का कोई काम रुकेगा नहीं। यहाँ ही मेरी समाधि बन सकती है। काम न आगे रुकेगा, न कभी पीछे रुका है। संन्यासी को किसी मठ या संस्था की जिम्मेवारी नहीं लेनी चाहिए। उससे अहंकार भी पैदा हो सकता है। आज मिशनरी धर्म-परिवर्तन का काम करते हैं। वह काम तो गृहस्थों का है। संन्यासी का काम है कि जिस धर्म में जो लोग हैं, वे उनके धर्म में ही अच्छे बनें। यह जो ग्रामदान का काम हो रहा है, इससे धर्मभावना स्थिर हो रही है, परंतु हरएक गाँव की व्यवस्था करने की जिम्मेवारी हमारी नहीं है। गाँव-गाँव के लोग अपनी अकल का उपयोग करें। संन्यासी पर अगर किसी संस्था-समिति की जिम्मेवारी आती है तो फंड इकट्ठा करने की जिम्मेवारी आती है, तो एक तो, वह गृहस्थ की जिम्मेवारी उठाता है; इसलिए धर्मान्तर होता है और दूसरे, उससे गृहस्थ आलसी बनते हैं। इन दो दोषों की छूत संन्यासी को लगती है। भूतदया और करुणा सिर्फ संन्यासी का धर्म नहीं है, गृहस्थों का भी है। शम, दम, दया और श्रद्धा, इन चार गुणों में चारों आश्रम और वर्ण आ जाते हैं। संन्यासी का गुण है—शम। गृहस्थों से दया-करुणा के काम कराने में वह मदद दे सकता है। परंतु वे खुद अगर ऐसे काम करेंगे, तो गृहस्थों की सेवा का भार संन्यासियों पर आयेगा और गृहस्थ याने सेवा लेने वाला हो जायेगा।"

स्वामीजी ने पूछा: "फिर रामकृष्ण मिशनवाले जो काम करते हैं, वह कैसा है?"—तो बाबा ने कहा: "उस काम का एक हिस्सा संन्यासी के लायक है, दूसरा हिस्सा गृहस्थों के लायक है। अगर मैं आश्रम की यह कल्पना छोड़ देता हूँ, सभी को मनुष्य के तौर पर ही देखता हूँ, तो यह ठीक है। फिर तो संन्यासी का यह वेष लेने की भी कोई जरूरत नहीं। फिर तो जैसे सब काम करते हैं, वैसे मैं भी करता हूँ। सब अपने-अपने गुणों के अनुसार काम करें। परंतु जहाँ हमने धर्म के रूप में संन्यास-आश्रम की स्थापना कर ली, वहाँ कुछ मर्यादाएँ आ ही जाती हैं।"

प्रकाशन-समाचार

भूदान-गंगोत्री: दामोदरदास मूँदड़ा पृष्ठ ३९२, मूल्य २॥)

"मेरे सामने ज़मीन एक से माँग कर दूसरे को देने का सवाल ही नहीं है। सब मिल कर सारी जमीन जोतें, यही प्रयोग हमें सिद्ध करना है, सारा गोपाल-कलेवा हमें करना है।"—विनोबा के उक्त विचार का उद्गम जिस क्षेत्र में हुआ, वहाँ का आँखों देखा वर्णन विनोबाजी के विचारों के साथ उक्त पुस्तक में संग्रहीत है।

सामूहिक प्रार्थना: पृष्ठ ६४, मूल्य =)

उक्त पुस्तक में प्रार्थना के आदर्श आदि पर गांधीजी और विनोबाजी के विचारों के साथ प्रातःकालीन और सायंकालीन प्रार्थनाओं का संकलन है। इसमें तुलसी-बोध-मौक्तिक, मोहन-मणिमाला, मशरूवाला-चिन्तन, राष्ट्रगीत, संकल्प-नवमी आदि विविध सामग्री है।

पुनर्मुद्रित

कताई-गणित, भाग: १ कृष्णदास गांधी पृष्ठ १२०, मूल्य १)

खादी-साहित्य की यह जानी-मानी पुस्तक कुछ समय से अप्राप्य थी। अब इसका नया संस्करण सुन्दर छपाई के साथ प्रकाशित हो गया है।

—अ० भा० सर्व-सेवा-संघ, प्रकाशन, राजघाट, काशी

संवाद-सूचनाएँ:

विनोबाजी का पदयात्रा-कार्यक्रम

मार्च ता. ८-९ एम. कल्लुपट्टी; १० कोट्टापट्टी; ११ पेरूंगमूनऊर; १२ तिक्कीयान; १३ नट्टापट्टी; १४ उटप्पानइक्कनूर; १५ आरामरथुपट्टी; १६ मुदलाकुलम्;

तार का पता: c/o खादी-वस्त्रालय, तिरुमंगलम् Tirumangalam (मदुराई)

पत्र व्यवहार का पता: c/o 'गांधी-निकेतन', डाकघर—टी. कल्लुपट्टी P.O. T. Kallupatti (Dist. Madurai)

श्री धीरेन्द्र भाई का कार्यक्रम

११ मार्च तक कोरापुट, १२ मार्च से १३ मार्च बलरामपुर, १५ मार्च से १९ मार्च खादीग्राम, २० मार्च से ४ अप्रैल बिहार के वितरण-शिविरों में, ५ अप्रैल खादीग्राम, ६-७ अप्रैल असरगंज (मुंगेर) में ग्रामराज-सम्मेलन, ९-१० अप्रैल धरहरा (बनारस)।

बंबई शहर के लोकसेवक अपनी पाक्षिक रिपोर्ट की एक प्रति निम्न पते पर, भेजें: सर्वोदय-साहित्य-प्रचार-समिति, "मणिभुवन", १९, लेबरनम रोड, गांवदेवी, बंबई ७

—सिद्धराज ढड्ढा, सहमंत्री

---

www.vinoba.in

श्री शंकरराव देव के नाम विनोबा का पत्र

[ता० ३० जनवरी को श्री शंकररावजी देव का ३० दिन का उपवास उरली कांचन (पुणे) के निसर्गोपचार-केंद्र में विनोबाजी के अनुज श्री बालकोबाजी के देखरेख में प्रारंभ हुआ और प्रभु-कृपा से ता. १ मार्च को सकुशल संपन्न हो गया। उपवास-समाप्ति के पूर्व लिखा हुआ विनोबाजी का पत्र एवं श्री शंकररावजी का निवेदन यहाँ प्रस्तुत है। उपवास-समाप्ति के समय का विवरण १२ वें पृष्ठ पर है। -सं०]

श्री शंकरराव,

आपके उपवास का आखिरी सप्ताह प्रारंभ हो गया है। उपवास में आपके पास रहने और सेवा करने का सौभाग्य बाळकोबा को प्राप्त हुआ, यह मैंने अपना भी सौभाग्य माना। वैसे मैं नाते-रिश्ते का विचार कभी करता नहीं, लेकिन इस समय बाळकोबा मेरा भाई है, यह अधिकार मैंने बजा लिया है! बाळकोबा आवश्यकता के कारण निसर्गोपचारक बना है, लेकिन जन्म से ही वह भक्त है। उसने भक्तिभाव-पूर्वक ही सेवा की होगी। उसका बदला उसे चित्तशुद्धि के रूप में बहुत-कुछ मिल गया होगा और मिलता रहेगा।

आपके इस उपवास में ईश्वर-कृपा से आपको अनेक गुण साध्य हुए हैं। किसी घटना से इसका संबंध न रख कर संपूर्ण जीवन-परिवर्तन की आकांक्षा उपवास के साथ जुड़ गयी, यह एक महालाभ है। उपासना में जितनी गहरी बुद्धि भरी जायगी, उतनी ही उसकी छाप गहरी उठेगी।

दूसरा गुण, साधना के 'संगोपन' का। ख्याति-प्राप्त व्यक्ति के लिए यह सधना कठिन ही होता है, लेकिन आपको यह बहुत अच्छी तरह सधा। इधर मद्रास के अखबारों में तो आपके उपवास की कोई खबर ही नहीं देखी। बोया हुआ बीज जब ढाँका जाता है, तभी वह उगता है। वह खुला पड़ा कि नष्ट हुआ। दीखने को तो 'ढाँकना' और 'उगाना' परस्पर-विरोधी क्रियाएँ ही दीख पड़ती हैं; लेकिन ढाँकने से ही अच्छी तरह उगता है, यह किसानों का और साधकों का अनुभव है! निरहंकारिता से ही यह सधता है! उपनिषदों के लेखक बहुत ही भाग्यशाली हैं। उनकी कृति अमर हुई और कर्तृत्व लुप्त! वैदिक ऋषियों को भी यह भाग्य नहीं प्राप्त हुआ, क्योंकि 'ऋषि-तर्पण' में उनके नाम लिये जाते हैं। कर्तृत्व जिस मात्रा में लुप्त होगा, उस मात्रा में कृति वीर्यवती बनेगी।

उपवास में आपने देहमर्यादा का रक्षण किया, इसमें भी भक्ति का गुण है। चित्तशुद्धि के संकल्प से उपवास करके फिर देह के हनन पर उतारू होना एक तरह से भगवान् पर हत्या डालने के ही समान है! भगवान् पर ऐसी हत्या डालना चाहने वाला प्रारंभ ही अभिमान से करता है। इससे चित्तशुद्धि कैसे संभव होगी? 'इसी शरीर में और इसी जीवन में' जो चित्तशुद्धि का धाम देखना चाहता है, वह उस देह की मर्यादा नहीं पालेगा, तो अपनी प्रतिज्ञा का ही भंग करेगा। चित्त के ऊपर तम का आवरण रहता है, तो यह बात ध्यान में नहीं आती है और 'ऐसे उपवासों में देह-मर्यादा मानना मानों मानसिक कमजोरी ही है,' ऐसा भास होता है। लेकिन वस्तुस्थिति ठीक इसके विपरीत है।

इन अनेक गुणों के कारण आपके इस उपवास के साथ एकरूप होने में मुझे जरा भी मानसिक बाधा नहीं रही। परिणाम यह हुआ कि उपवास आप करें और मैं खाकर भी उसका फल चखूँ, ऐसी अनुभूति हुई!

तंत्र-मुक्ति और निधि-मुक्ति का प्रस्ताव पळनी में बाल-गोपालों ने एक-हृदय होकर किया। परिणामस्वरूप हमारी शुद्धि और शक्ति बढ़ गयी है, ऐसा स्पष्ट दीख रहा है। घरदार छोड़ कर सेवक काम में लग गये हैं। मेरे मन ने आपके इस उपवास के साथ ऐसा संकल्प जोड़ लिया कि हम सेवकों के हृदय का 'सौमनस्य' वृद्धिंगत हो और हमें सौम्य, सौम्यतर, सौम्यतम की प्रक्रिया हृदयग्राह्य हो।

दीर्घ उपवास जितना कठिन होता है, उसकी तुलना में उसके बाद देह का धातु-साम्य संभालना अधिक कठिन होता है। उसके लिए पर्याप्त अवकाश देना चाहिए।

कर्नारमपट्टी, मदुराई, २२-२-'५७ —विनोबा के प्रणाम

(मूल मराठी)

...पत्थर कितना कठिन, कितना कठोर। पर भक्ति द्वारा उसमें भी कारुण्य निर्माण होता है। तो क्या मानव में वह नहीं होगा?

...मत भूलो कि प्रेम ही ईश्वर का रूप है। वह चाहे गरुड़-वाहन हो या ऋषभवाहन, पर वह प्रेमवाहन जरूर है। क्या तुम्हारे पास प्रेमपूर्ण हृदय और विनम्र आँखें हैं? तो लो, जहाँ चाहो, परमेश्वर का दर्शन कर लो। —विनोबा

उपवास-समाप्ति पर श्री शंकरराव देव का निवेदन

मूकं करोति वाचालं पंगुं लंघयते गिरिम्।
यत्कृपा तमहं वंदे परमानंदमाधवम्॥

इस शरीर को बासठ साल पूरे होकर जब तिरसठवाँ वर्ष लगा, तब तीस दिन के उपवास का व्रत प्रारंभ किया।

जीवन में जब से अंतःसृष्टि और बहिःसृष्टि का भान हुआ, तब से आध्यात्मिक और नैतिक पुरुषार्थ का आकर्षण लगने लगा, लेकिन वह साध्य नहीं बना और शुभ, परंतु भौतिक पुरुषार्थ की सिद्धि का साधन ही बना। परिणाम यह हुआ कि एक तरह से सात्त्विक ही क्यों न हो, अहंकार बढ़ता गया और जीवन स्वनिष्ठ या स्वकेन्द्रित बनता गया! अनुभव यह आया कि जिस प्रकार सुन्दर और मधुर फल को भीतर से कीड़ा लगा होता है, उसी तरह भौतिक पुरुषार्थ की सिद्धि के यश को अपयश का कीड़ा लगा है। भावार्थ यह कि यश तो मिला, लेकिन प्रेम और स्नेह नहीं मिला, न वह उतना दिया ही जा सका। जीवन के बासठवें साल के अन्त-अन्त में यह अनुभव इस विलक्षण रूप से आया कि इस जीवन-पद्धति के प्रति सर्वथा ऐसा निर्वेद या उद्वेग उत्पन्न हुआ कि इसी जिंदगी में पुनर्जन्म लेकर पूर्वायुष्य के सारे संकल्प-विकल्प गल जायँ और संकल्प-शून्य-स्वस्वरूप में चित्त स्थिर हो सके, ऐसे नवीन जीवन का प्रारंभ करने की उत्कट प्रेरणा हुई; क्योंकि श्री ज्ञानदेव के कथनानुसार 'स्थिर चित्तावस्था' ही 'चैतन्यावस्था' है। इसे ही मैं चित्तशुद्धि मानता हूँ। पूर्वपरम्परा और अपनी श्रद्धा का अनुसरण करके दीर्घकालीन उपवास करना ही उसका एकमात्र उपाय मुझे महसूस हुआ। मनुष्य को इस जिंदगी में मृत्यु से एक बार ही भेंट होती है और फिर वह वापस नहीं आता है। लेकिन प्रबल इच्छा-शक्ति हो, तो वह मृत्यु का दर्शन लेकर भी लौटता है और लौट कर नये जीवन को प्रारंभ कर सकता है।

फिर, दीर्घकालीन उपवास जीवन का बहुत पहले का एक संकल्प भी था। सज्जनों की सद्भावनाओं के बल पर वह संकल्प पूरा हुआ और उपवास का इस समय का हेतु कुछ अंशों में सफल हुआ, इसके लिए चित्त को समाधान है। "कुछ अंशों में" कहने का कारण यह है कि इच्छा थी कि इस उपवास में "अजपाजप" हो और चित्त बीच-बीच में तो भी अखंड-स्वरूप में लीन हो, लेकिन यह सध नहीं सका। आगे-आगे तो स्मरण भी अशक्य हो गया। लेकिन बैठक आखिर तक टिकी, क्योंकि शरीर-क्लेश अपेक्षा से अधिक हुए। जीज़स क्राइस्ट, भगवान् बुद्ध और संत तुकाराम ने जो दीर्घ उपवास किये, वे देह का भान पूर्णतः भूल कर केवल—"तद्बुद्धयस्तदात्मानस्तन्निष्ठास्तत्परायणाः"—की अध्यात्मावस्था में ही किये होंगे या वे वैसे हो गये होंगे। इस अवस्था के देह-धर्म तावत्-काल स्थिर रहे होंगे। वह भाग्य विरल ही है। नचिकेता यम के द्वार पर अन्न-ग्रहण न करते हुए प्रतीक्षा करता रहा, इस कथा का स्मरण कराने वाली ही आखिर की कुछ रातें महसूस हुईं। नचिकेता के समान यम-दर्शन और यम से संवाद हुआ, ऐसा नहीं कहा जा सकता। वैसा हुआ होता, तो कदाचित् ईश्वर-कृपा से आत्मविद्या का वरदान लेकर ही वापस आना हुआ होता! लेकिन मृत्यु की भेंट न भी हुई हो, तो भी दर्शन की कल्पना घटित हुई, इस विचार से जीवन को प्रारंभ करने के लिए इस उपवास का उपयोग होगा, ऐसी श्रद्धा है। इस श्रद्धा से आप सब सज्जनों को साक्षी रख कर इस उपवास-व्रत की समाप्ति आज सूर्योदय के समय कर रहा हूँ।

यह देह कब और कैसे गिर पड़ेगी, नहीं जानता। जब पड़ेगी, तब पड़ेगी; लेकिन तब तक शून्य बन कर और शून्य बनने का भी विस्मरण हो जाने की अवस्था में सत्संगति का लाभ प्राप्त करते हुए, भगवान् बुद्ध के द्वारा भिक्षुकों को जैसा कहा गया था, 'बहुजन-हित के लिए, मनुष्य-जाति के कल्याण के लिए, जगत् के प्रति करुणा-बुद्धि धारण करके' इस शरीर का छीजन हो जाय, यही इच्छा है। इस साधना में आप सब सज्जनों की सद्भावना का बल प्राप्त हो, यही आप सबसे हृदयस्थ भावनाओं के साथ प्रार्थना है।

उपवास-व्रत के प्रारंभ से अंत तक श्री बाळकोबाजी का सत्संग इस व्रत का अध्यात्म रहा। व्रत-सिद्धि के लिए उनके सब सहकारियों ने और श्री शास्त्रीजी, चि. वृन्दा, सुनंदा और ताई ने जो अपार कष्ट सहे और सेवा की, उससे उऋण कैसे हो सकूँगा? वह कल्पना ही असंभव है। रजःकण के समान विनम्र होकर इसके लिए मैं उन्हें प्रणाम करता हूँ! —शंकरराव देव

आश्रम, सासवड (पुणे)
(मूल मराठी) १ मार्च, '५७

---

www.vinoba.in

श्री शंकररावजी देव की उपवास-समाप्ति

(निर्मला देशपांडे)

पूना के निकट उरळीकांचन का प्राकृतिक चिकित्सालय गांधीजी के आखिरी दिनों की एक इच्छा का साकार रूप है, जहाँ बीमारों को आरोग्य-लाभ के साथ-साथ मानसिक शांति तथा आध्यात्मिक प्रेरणा का भी लाभ होता है। श्री शंकररावजी देव ने अपने तीस दिनों के उपोषण के लिए उरळी का स्थान चुना, जहाँ उन्होंने 'शून्य बनने' के लिए कठिन तपस्या की। विनोबाजी के छोटे भाई शिवाजी ने उपवास-समाप्ति के समय भेजे हुए पत्र में लिखा कि "ईश्वर-कृपा से उपवास ठीक से समाप्त होंगे और 'दग्धं दग्धं पुनरपि पुनः काचनं कांतवर्णम्'—इस वचन के अनुसार शंकररावजी फिर से देश-सेवा के कार्यक्रम में पूर्ववत् समुज्ज्वलता से हिस्सा लेंगे, ऐसा मुझे विश्वास है। उनकी तपस्या वास्तव में अद्भुत है।..."

ता० १ मार्च की सुबह को छह बजे ईशावास्य के पाठ से एक गंभीर तथा पवित्र समारोह का आरंभ हुआ। श्री जयप्रकाशजी, प्रभावती देवी, रावसाहब तथा अच्युतजी पटवर्धन और अन्य निकट के स्नेही-जन उपस्थित थे। वेदमंत्र तथा तुलसी-रामायण के एक अंश का पाठ हुआ और कुछ चुने हुए भजन गाये गये। फिर शंकररावजी का निवेदन, विनोबाजी और शिवाजी के पत्र पढ़ कर सुनाये गये।

उसके बाद उपस्थित सज्जनों के अनुरोध पर जयप्रकाशजी ने कहा—"इस मौके पर मैं भी दो शब्द कहूँ, यह भार मुझ पर डाला गया है। वेद, उपनिषद् और सन्तों के शब्दों के बाद इस मौके पर किसीके लिए भी कहने को बाकी क्या रहता है और रहता भी हो, तो भी मेरे जैसा व्यक्ति कह ही क्या सकता है? ऐसे मौके पर हम तो यही अनुभव करते हैं कि बड़े सौभाग्य से हमें एक पवित्र सागर में डाल दिया गया है। अब हमें अपनी पूरी शक्ति लगाकर उसमें तैरने का प्रयास करना चाहिए। परमात्मा की कृपा से हम सब लोगों को भाई शंकररावजी का शरीर वापिस मिला है। इस शरीर का पुनर्जन्म हुआ, ऐसा उन्होंने स्वयं महसूस किया है। वे तो हम लोगों से बहुत दूर चले गये, ऐसा मुझे महसूस हो रहा है। लेकिन उपनिषदों की भाषा में इतनी दूर गये हैं कि हम सबके बहुत समीप भी आ गये हैं। इस उपोषण ने, इस अग्नि ने जिस प्रकार से साफ करके, निखार करके यह रत्न हमें, सारे मानव-समाज को वापिस दिया है, उसके लिए हम सब परमात्मा की वंदना करें। विनोबाजी की तरह मैं यह दावा नहीं कर सकता कि शंकररावजी के उपवास का पूरा आनंद मुझे मिलता रहा है। लेकिन इतना अवश्य कहूँगा कि दूर रहते हुए भी मुझे बार-बार आपकी याद आती रही है। जब आपके उपोषण का प्रारंभ होने वाला था, तब मैंने कई बार सोचा कि तार या पत्र दूँ। वह सब नहीं हो सका, फिर भी हृदय आपके निकट था। अपने अनुभव से और पूरी सचाई से मैं यह कह सकता हूँ कि महात्मा जो तप करते हैं, उसका प्रभाव उसी प्रकार से चारों तरफ पड़ता है, जैसे अंधेरे में कोई दीपक जले और उसका प्रकाश फैले। आज हम सबको एक ऐसे पवित्र सागर में तैरने का सौभाग्य मिला है कि हम सब बहुत कृतकृत्य हुए हैं। शंकररावजी ने भगवान् से यह प्रार्थना की है कि वे शून्य बनें। हम सब लोग कार्य में लगे रहते हैं, परंतु तरह-तरह के अहंकार हमें घेरे हुए रहते हैं कि हम सब समाज की, देश की और दुनिया की बड़ी सेवा कर रहे हैं, हमारे द्वारा कोई क्रांति हो रही है, इत्यादि। ऐसे मौके पर हम सभी को ऐसी प्रेरणा मिलती है कि हम सब आप ही की तरह भगवान् से शून्य बनने की प्रार्थना करें। भगवान् आपके मनोरथ पूरे करें, यह सबके हृदय की प्रार्थना है।"

रावसाहेब पटवर्धन ने समारोह-समाप्ति का भाषण किया।

विनोबाजी के छोटे भाई—बाळकोबा, जो उरळीकांचन के प्राकृतिक चिकित्सालय का संचालन करते हैं—शंकररावजी के उपोषण के समय उनकी सेवा करते रहे। बाळकोबाजी के द्वारा शंकररावजी के स्वास्थ्य का वृत्तान्त प्राप्त हुआ : उपवास के आरंभ में शंकररावजी का वजन १२२ पौंड था और अन्त में ९३ पौंड। २७ दिनों तक शंकररावजी का स्वास्थ्य ठीक रहा, लेकिन आखिर के तीन दिनों में उन्हें बहुत तकलीफ हुई। वे थोड़ा पानी लेते थे। आखिर के दस दिनों में डॉक्टर की सलाह से पानी में थोड़ा नीबू और सोड़ा मिलाया जाता था। उपवास के दिनों में उनका सतत आध्यात्मिक श्रवण तथा भजन चलता रहा। बाळकोबाजी उन्हें ब्रह्मसूत्र, शांकरभाष्य सुनाते थे। योगसूत्र तथा उपनिषदों का पठन भी चलता था। काका अत्रे की पुत्री सुनंदा अत्रे भजन सुनाती थी। आखिर के तीन दिनों में सिर्फ ब्रह्मसूत्र का श्रवण चला। शंकररावजी की बहन ताई भी इस समय एक माह से यहाँ आकर सेवा-शुश्रूषा में लग गयी थीं।

श्री शंकररावजी एक महीने तक उरळी में ही रहेंगे। यद्यपि उनके स्वास्थ्य के बारे में चिंता करने का कोई कारण नहीं है, फिर भी कमजोरी बहुत है। श्री बाळकोबा ने कहा कि धीरे-धीरे उनका स्वास्थ्य सुधरता जायगा।

विनोबाजी हमेशा कहते हैं कि "भारत का वैभव है—तपस्या, आध्यात्मिक जिज्ञासा।" असंख्य साधकों की तपस्या से पावन बनी हुई इस भरत भूमि को अपने एक सुपुत्र की इस एकांत तपस्या से गौरव ही महसूस हो रहा होगा!

सर्वोदय-मेला-सूत्रांजली-विवरण

बिहार-खादी-समिति, सिमरी (दरभंगा) की ओर से सर्वोदय-पक्ष मनाया गया। २१ गाँवों में १७१२ लोगों ने सूतकताई में हिस्सा लिया। कुल १२६५ गुण्डियाँ काती गयीं। ४३४३ गुण्डियाँ सूत्रांजली के रूप में मिलीं।

श्रमभारती, खादीग्राम (मुंगेर) में सर्व-सेवा-संघ के सहमंत्री श्री सिद्धराज ढड्ढाजी ने सूत्रांजली में छिपी भावना का विश्लेषण कर जागरूकता के साथ कार्य करने की सूचना दी। ३०१ गुण्डियाँ सूत्रांजलि में प्राप्त हुईं।

नवगछिया में ८१ और दिघवारा में १६१० सूत्रांजली मिलीं।

खादी-ग्रामोद्योग-संघ, सर्वोदय-ग्राम, मुजफ्फरपुर द्वारा आयोजित सिंकदरपुर के गांधी-मेले में १५३५ सूत्रांजली अर्पित हुईं। भागलपुर जिले में गौरीपुर-लत्तीपुर (बिहपुर) के सर्वोदय-मेले में करीब २००० सूत्रांजली मिली।

महाराष्ट्र में कुलाबा जिले के सासवने में १०००, कोल्हापुर जिले के कुरुंदवाड में १५००, ठाणे जिले के बोर्डी में १८०० और प. खानदेश के प्रकाशे के सर्वोदय-मेलों में १५०० गुण्डियाँ सूत्रांजली में अर्पित की गयीं।

उत्तर प्रदेश के अंक बाद में दिये जायेंगे।

स्व० अण्णासाहब दास्ताने !

हमें यह सूचित करते हुए दुःख होता है कि महाराष्ट्र के अनन्य रचनात्मक कार्यकर्ता, सेवक और गांधी-परिवार के पुराने सदस्य श्री अण्णासाहब (वासुदेव विठ्ठल) दास्ताने का देहांत ता. १ मार्च की शाम को परंधाम-पवनार आश्रम में, ७६ वर्ष की उम्र में बीमारी के कारण हो गया।

खादी एवं तत्संबंधी प्रवृत्तियों की जड़ें महाराष्ट्र में, विशेषकर खानदेश में जमाने में एवं रचनात्मक काम की निष्ठा उत्पन्न करने में अण्णासाहब ने अपना जीवन खपा दिया था। राष्ट्रीय आंदोलनों में भी वे किसीसे पीछे नहीं रहे। सन् '२१ के असहयोग-आंदोलन के समय अपनी चलती वकालत ठुकरा कर वे स्वतंत्रता-संग्राम में शामिल हुए और अंत तक गांधी-मार्ग के पथिक बने रहे। अंत के दिनों में भी वे कुष्ठ-सेवा में लगे रहे। खानदेश के रचनात्मक कार्यकर्ताओं को उनसे सतत मार्गदर्शन मिलता रहता और उस जमाने की एक पीढ़ि का वे प्रतिनिधित्व करते थे।

उनका जाना हमारी पारिवारिक हानि ही है। सारा भूदान-परिवार उनके कुटुम्बियों के साथ इस दुःख में शामिल है, यह कहने की आवश्यकता नहीं। —सं०

विषय-सूची

१. जन-जनार्दन से क्रान्ति-यात्रा के पथिकों की मांग	धीरेंद्र मजूमदार	१
२. पूर्णियाँ-जिला-निवासियों से निवेदन	वैद्यनाथ प्रसाद चौधरी	२
३. सर्वोदय की चतुर्विध निष्ठा	सिद्धराज ढड्ढा	३
४. विनोबा-प्रवचन-सार	—	४
५. 'मालिक सीताराम, छोट् मन काहे कियो !'	सिद्धराज ढड्ढा	५
६. 'संख्य-भक्ति' की उपासना का आंदोलन	विनोबा	६
७. नौजवानों को क्रांति पुकार रही है !	जयप्रकाश नारायण	६
८. पुरुषार्थ को आवाहन !	विनोबा	७
९. ग्रामदानी गाँवों के कर्ज का प्रश्न !	दामोदरदास मूँदड़ा	७
१०. तमिलनाड़ की क्रांतियात्रा से—	—	८
११. खादीग्राम-श्रमभारती : क्रांति-पथ पर	दादाभाई नाईक	९
१२. तमिलनाड़ की भूदान-यज्ञ-वार्ता; संवाद-सूचनाएँ	मीरा व्यास	१०
१३. श्री शंकरराव जी देव के नाम विनोबाजी का पत्र	—	११
१४. उपवास-समाप्ति पर श्री शंकररावजी का निवेदन	—	११
१५. श्री शंकररावजी देव की उपवास-समाप्ति	निर्मला देशपांडे	१२
१६. सर्वोदय-मेला-सूत्रांजली-विवरण, आदि	—	१२

सिद्धराज ढडढा, सहमंत्री, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : पोस्ट बॉक्स नं० ४१, राजघाट, काशी

www.vinoba.in